हरिभूमि

महेन्द्रगढ़-नारनौल भूमि

रोहतक, रविवार, 20 जुलाई 2025

11 बीआर स्कूल सेहलंग में मनाया सावन महोत्सव

12 जॉब सिक्योरिटी के लिए एचकेआरएन कर्मचारियों ने...

पीजी कोर्स में आवेदन प्रक्रिया हुई शुरू, छह कॉलेजों में 1454 सीटों पर होंगे दाखिले

- प्रत्येक वर्ष जिले के 33 कॉलेजों में 18980 सीटों पर होते है स्नातक में दाखिले, सीटे के अभाव काफी विद्यार्थी नहीं कर पाते पीजी की पढ़ाई

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

उच्चतर शिक्षा विभाग की ओर से स्नातकोत्तर में दाखिले का शेड्यूल जारी कर दिया है। जिला के छह कॉलेजों में 1454 सीटों पर दाखिले होंगे। वहीं विभाग की ओर से अभी तक आवेदन की अंतिम तिथि निर्धारित नहीं की गई है।

शिक्षा निदेशालय ने सभी महाविद्यालयों को 22 जुलाई तक दाखिले से संबंधित विवरण अपलोड करने का निर्देश दिया है। अभी स्नातकोत्तर के दाखिला का कोई शेड्यूल जारी नहीं किया गया है। जल्द ही शेड्यूल जारी होने की उम्मीद जताई जा रही है। जिले के छह राजकीय महाविद्यालय में 1454 सीटें है। जिला से करीब 10 हजार विद्यार्थी पीजी कोर्स के आवेदन कर सकते है।

जिले में स्नातकोत्तर की सीटें कम होने के कारण विद्यार्थियों को दूर जाकर करनी पड़ती है पढ़ाई

महेंद्रगढ़। राजकीय महिला महाविद्यालय महेंद्रगढ़। फोटो: हरिभूमि

इन दस्तावेजों की है आवश्यकता

उच्चतर शिक्षा विभाग की ओर से दाखिला संबंधित दिशा निर्देश जारी कर दिए है। विभाग के ओर से जारी निर्देश के अनुसार विद्यार्थियों को पीजी के आवेदन करने के लिए परिवार पहचान पत्र, आधार कार्ड, दसवीं, बाहरवीं व स्नातक की सर्टिफिकेट, पासपोर्ट साइज फोटो, चरित्र प्रमाण पत्र की आवश्यकता होगी। आरक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के लिए जाति प्रमाण पत्र तथा हरियाणा निवास प्रमाण पत्र अनिवार्य है। वहीं हरियाणा बोर्ड के अलावा अन्य बोर्ड के विद्यार्थियों को माइग्रेशन सर्टिफिकेट की आवश्यकता होगी।

सीटों के अभाव में काफी विद्यार्थी नहीं कर पाते पीजी

जिले के 14 राजकीय महाविद्यालय में स्नातक की 10620 सीटें है। वहीं 19 निजी कॉलेजों में 8360 सीटे है। जिला में प्रति वर्ष 18980 विद्यार्थी की स्नातक की परीक्षा देते है। इनमें से करीब 15 हजार विद्यार्थी स्नातक में पासआउट होते है। जिला के छह राजकीय कॉलेजों में पीजी की केवल 1454 सीटें है तथा किसी प्राइवेट पीजी कॉलेज की कक्षाएं नहीं लगती है। जिला के विद्यार्थी के पास इन कॉलेजों के अलावा केंद्रीय विश्वविद्यालय में स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने का विकल्प होता है। सीटों के अभाव में विद्यार्थियों को दूसरे जिला में जाकर पीजी की पढ़ाई करती है। वहीं काफी विद्यार्थी सीटों के अभाव में पीजी की पढ़ाई नहीं कर पाते है।

राजकीय महाविद्यालय अटेली

एमए अंग्रेजी	40
एमए संस्कृत	60
एमकॉम	80
एमसीए	60
ज्योग्राफी	20

राजकीय महाविद्यालय सतनाली

ज्योग्राफी	40
इतिहास	40
कैमेस्ट्री	40

कॉलेजों में कोर्स और सीटों की स्थिति

राजकीय महाविद्यालय नारनौल:

एमए अंग्रेजी	40
एमए हिंदी	40
एम इतिहास	40
पॉलिटिक्ल साइंस	40
संस्कृत	40
एमकॉम	40
बोटनी	20
कैमेस्ट्री	40
एमसीए	40
ज्योग्राफी	40
गणित	40
भू विज्ञान	30
पीजीडीसीए	40

राजकीय महिला महाविद्यालय नारनौल:

अंग्रेजी	40
ज्योग्राफी	40
हिंदी	40
पॉलिटिक्ल साइंस	40
एमकॉम	40
कैमेस्ट्री	40
गणित	40

राजकीय महाविद्यालय महेंद्रगढ़

एमए अंग्रेजी	50
एमए हिंदी	50
कैमैस्ट्रि	40
पॉलिटिक्ल साइंस	40
ज्योग्राफी	20
एमकॉम	40
एमसीए	40

राजकीय महिला महाविद्यालय

अंग्रेजी	40

खबर संक्षेप

भाजपा कार्यकर्ताओं ने किया पौधरोपण

नारनौल। स्लम एरिया टैलेंट इंदिरा कॉलोनी प्रांगण में वहां पढ़ने वाले बच्चों के साथ दिल्ली प्रदेश कि मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता के जन्मदिन पर पौधरोपण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें सभी ने पौधरोपण करके मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता की लंबी उम्र की कामना की, साथ ही पर्यावरण संरक्षण का संदेश भी दिया। कार्यक्रम में जिला अध्यक्ष यतेंद्र राव मौजूद रहे। जिला अध्यक्ष ने कहा कि प्रकृति को ईश्वर का दूसरा रूप कहा जाता है। जिला महामंत्री किशनलाल सैनी ने कहा कि पर्यावरण में संतुलन बनाए रखते हैं। पौधे व पेड़ों से हमें छाया के साथ साथ फल भी मिलते हैं और ऑक्सीजन प्रदान करते हैं।

अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ की बैठक आयोजित

सतनाली मंडी। सीएचसी में अनुबंधित स्वास्थ कर्मचारी संघ की बैठक का आयोजन किया गया। संघ के प्रदेश अध्यक्ष भूपेश पालीवाल के मार्गदर्शन में आयोजित बैठक की अध्यक्षता संघ के सीएचसी सतनाली प्रधान छाजुराम ने की। उन्होंने बैठक में उपस्थित कर्मचारियों ने एकजुट होकर संगठन को मजबूत करने तथा मांग को लेकर सामुहिक प्रयास करने का आह्वान किया। बैठक का संचालन कर रहे जिला संगठन मंत्री नीरज खरखोदिया ने बताया कि बैठक में अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारियों ने समस्याओं पर चर्चा की और एसओपी जारी न करने पर सरकार के खिलाफ रोष प्रकट किया।

नगर परिषद एवं जनस्वास्थ्य विभाग के खिलाफ की नारेबाजी

सीमेंट की जगह टाइलों के सड़क बनाने के विरोध में प्रदर्शन

नगर परिषद ने जहां पुरानी सड़क नई बनाने के लिए तोड़ दी, वहीं जनस्वास्थ्य विभाग ने सीवर मरम्मत के लिए सड़क तोड़ दी।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

शहर के मोहल्ला चांदुवाड़ा के लोगों का नगर परिषद एवं जनस्वास्थ्य विभाग ने जीना मुहाल कर रखा है। नगर परिषद ने जहां पुरानी सड़क नई बनाने के लिए तोड़ दी, वहीं जनस्वास्थ्य विभाग ने सीवर मरम्मत के लिए सड़क तोड़ दी। सीवर वाली टूटी सड़क की गंदगी एवं मिट्टी जहां अब भी सड़क पर बनी हुई है, वहीं पुरानी सड़क की जगह ठेकेदार पुरानी सीमेंट वाली सड़क बनाने की बजाए टाइलों वाली सड़क बनानी शुरू कर दी, जिसका मोहल्ला के लोगों ने सड़क पर उतरकर विरोध प्रदर्शन किया और इसके खिलाफ नाराजगी व्यक्त की।

सड़क पर उतरकर रोष कर रहे फोटोग्राफर मुकेश गोयल, जतिन अग्रवाल, भारत अग्रवाल, सुनील सोलंकी, घनश्याम, दयाकिशन, प्रमिला हल्दिया, नेहा, इन्दु, कमलेश एवं अन्य लोगों ने बताया कि हमारे मोहल्ला चांदुवाड़ा की सड़क पहले सीमेंट वाली सीसी सड़क बनी हुई थी, जिसे ठेकेदार ने नई सड़क बनाने के लिए 15 मार्च के आसपास तोड़ दी थी। उन्होंने बताया कि पुरानी सड़क काफी ठीक थी, लेकिन उसे नई बनाने के नाम पर तोड़ दिया गया। टूटी सड़क होने के कारण यहां के लोगों ही नहीं, यहां से बाजार आने–जाने वाले लोगों को कई महीनों तक परेशानियों का सामना करना पड़ा है।

उन्होंने बताया कि कमाल की बात यह है कि जब सड़क तोड़ी गई, तब ठेकेदार से बात की थी, तब उसने बताया कि फिर से सीमेंट वाली सीसी सड़क ही बनाई जाएगी, लेकिन अब जब उसने सड़क बनानी शुरू की तो वह सीमेंट की टाइलें ले आया। उन्होंने बताया कि टाइलों की सड़क से पहले वाली सड़क बेहतर थी, क्योंकि टाइल की सड़कों में से यदि एक टाइल भी निकल जाए तो फिर सड़क जल्दी खराब हो जाती है। इसलिए ठेकेदार को अपने वादे अनुसार सीमेंट वाली सड़क ही बनानी चाहिए अन्यथा वह विरोध करेंगे।

नारनौल। पुरानी सीमेंट वाली सड़क जिसे तोड़ दिया गया व डा. नरूला की कोठी के सामने की सड़क की हालत। फोटो: हरिभूमि

नारनौल। टाइलों की सड़क बनाने का विरोध करते चांदुवाड़ा के लोग।

सीवरेज लाइन डालने के बाद नहीं उठाया मिट्टी का ढेर

महर्षि वाल्मीकि चौक से चांदुवाड़ा की तरफ जाने वाली प्रमुख सड़क पर सूरज बोहरा के शोरूम एवं डॉ. आरपी नरूला की कोठी के सामने से लेकर वाल्मीकि सभा तक करीब एक महीना पहले सीवरेज लाइन डाली गई थी, जिसका मलबा एवं मिट्टी अभी तक सड़कों पर पड़े हुए हैं। जबकि यहां बरसात के सीजन के कारण भारी कीचड़ बना रहती है, जिससे लोगों का इस सड़क पर से आवागमन दूभर हो गया है। कोई व्यक्ति यदि गलती से इस सड़क पर अपने दोपहिया वाहन को ले आता है तो वह सही सलामत घर नहीं पहुंच सकता। उसको इस कीचड़ में जरूर गिरने का खतरा रहेगा। यहां के लोगों ने बताया कि आम जनता की सुनाई करने वाला कोई नहीं है। जनस्वास्थ्य एवं प्रशासनिक अधिकारियों ने आंखें मूंद रखी हैं।

कांवड़ लाकर स्वास्थ्य मंत्री को भेंट किया गंगाजल

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

अटेली क्षेत्र के गांव चन्दपुरा के तेजप्रकाश ने रक्षा राज्य मंत्री राव इंद्रजीत सिंह और हरियाणा सरकार की स्वास्थ्य मंत्री आरती राव की जीत की मन्नत पूरी होने पर हरिद्वार से कांवड़ लाकर विशेष रूप से गंगाजल अर्पित किया। उन्होंने स्वास्थ्य मंत्री कार्यालय अटेली में शनिवार को आरती राव को गंगाजल भेंट कर उनके उज्ज्वल राजनीतिक भविष्य एवं निरंतर सेवा भावना की कामना की। वहीं तेजप्रकाश ने बताया कि वे राव इंद्रजीत सिंह और आरती राव के लंबे समय से कट्टर समर्थक हैं और उनके नेतृत्व में क्षेत्र का सर्वांगीण विकास हो रहा है। इसी विश्वास और श्रद्धा के साथ उन्होंने हरिद्वार से कांवड़ यात्रा की और मां गंगा से आशीर्वाद स्वरूप पवित्र जल लाकर उसे आरती राव को भेंट किया। कार्यालय मौजूद लोगों ने तेजप्रकाश की भक्ति और समर्पण की सराहना की। इस मौके पर डीएसपी सतीश कुमार, रणबीर सरपंच बेगपुर, रविन्द्र, मुकेश कुमार, दिनेश आर्य, राजेंद्र पंच, सतबीर सरपंच सुजापुर, श्रीकांत, मुकेश पृथ्वीपुरा, हरीश, ललित व रामपाल आर्य आदि मौजूद रहे।

मंडी अटेली। स्वास्थ्य मंत्री आरती राव को गंगाजल भेंट करते तेजप्रकाश। फोटो: हरिभूमि

संस्था पर लगाया गलत तरीके से पैसे हड़पने का आरोप

महेंद्रगढ़। गांव माजरा कलां के सरपंच प्रतिनिधि ने गांव के चार लोगों पर संस्था बनाकर गलत तरीके से पैसे हड़पने का आरोप लगाते हुए पुलिस को शिकायत दी है। पुलिस को दी शिकायत माजरा कलां के सरपंच प्रतिनिधि कुलदीप यादव ने बताया कि करीब चार वर्ष गांव चार लोग उनके पास आए तथा उन्होंने कहा कि हम सब मिलकर एक संस्था बना रहे हैं। संस्था सामाजिक व धार्मिक कार्य करेगी। उन्होंने उसकी 11 हजार रुपये की पर्ची काटकर उसे भी संस्था का सदस्य बना दिया। इसके बाद वह दो चार बार संस्था की मीटिंग में भी गए। इसके बाद उसे बैठक में बुलाना बंद कर दिया। संस्था के पदाधिकारियों ने उसके नाम से दान लेना शुरू कर दिया तथा दानकर्ताओं को रसीद भी नहीं दी। कुछ दिन पहले वह संस्था के पदाधिकारियों के पास पहुंचे तथा जिन लोगों से दान लिया है, उसकी रसीद मांगी। संस्था के पदाधिकारियों ने उसको तीन तरह से रसीद दी, जिसका उन्होंने ऐतराज भी किया। संस्था के पदाधिकारियों ने उन्होंने जवाब दिया कि संस्था में ऐसे ही चलता है। संस्था रजिस्ट्रर चेक किया तो उसने देखा कि संस्था ने उसके फर्जी हस्ताक्षर कर रखे हैं। जब इसका विरोध किया तो संस्था पदाधिकारियों ने उसको धमकी दी। कुलदीप यादव ने बताया कि संस्था पदाधिकारियों ने लाखों रुपये का गबन किया है। उन्होंने पुलिस को शिकायत देकर संस्था के पदाधिकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने की मांग की है।

गहली के डॉ. सुनील कुमार ने हासिल की कैप्टन की उपाधि

नारनौल। गांव गहली के डॉ. सुनील कुमार जाखड़ पुत्र मानसिंह जाखड़ ने आर्मी मेडिकल कोर में कैप्टन की उपाधि हासिल की। कैप्टन सुनील के पिता आर्मी से सेवानिवृत्ति हैं और सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने एक शिक्षक के रूप में अपनी सेवाएं प्रदान की। डॉ. सुनील कुमार ने यह मुकाम अपने दादा स्वर्गीय घीसाराम जाखड़ की प्रेरणा से हासिल किया। स्वर्गीय घीसाराम जाखड़ का एक स्वप्न था कि गांव में पहला डॉ. बनाने के बाद परिवार का सदस्य आर्मी ऑफिसर बनकर डॉक्टर के रूप में अपनी सेवा दें। उनके सपनों को डॉ. सुनील कुमार जाखड़ ने साकार करते हुए उनकी प्रेरणा से यह मुकाम हासिल किया। इस उपलब्धि पर उनकी 101 वर्षीय दादी जयकौर ने उन्हें विशेष रूप से आशीर्वाद प्रदान किया। गांव का पहले डॉ. जितेंद्र कुमार ने एक उदाहरण प्रस्तुत करते हुए अपने गांव के बहुत से बच्चों को यह रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित किया। डॉ. सुनील जाखड़ प्रारंभ से ही कुशाग्र बुद्धि और होनहार रहा है। उसकी इस उपलब्धि पर उनकी दादी जयकौर, माता भतेरी देवी, चाचा डॉ. प्रेम कुमार जाखड़, बड़ी बहन डॉ. संतोष, सरपंच मंजीत देवी, कुलदीप सिंह, घीसाराम नंबरदार, लीलू गुलिया, सतबीर एडवोकेट, भूपसिंह बडेसरा, महेंद्र सिंह खन्ना, वेदप्रकाश पंडित ने सुनील को कप्तान बनने पर बधाई दी।

हरियाणा सरकार व उच्चतर शिक्षा विभाग से मिली अनुमति, इंदिरा गांधी विवि से अभी अप्रूवल बाकी

पीजी कॉलेज में वाणिज्य विभाग करवाएगा एक साल का डिजिटल मार्केटिंग पीजी डिप्लोमा

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

राजकीय महाविद्यालय के वाणिज्य विभाग की ओर से वर्तमान सत्र से एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा इन डिजिटल मार्केटिंग पाठ्यक्रम प्रारंभ किया जा रहा है। जिसकी हरियाणा सरकार व उच्चतर शिक्षा विभाग से अनुमति मिल चुकी है। हालांकि अभी इन्दिरा गांधी विश्वविद्यालय से अप्रूवल बाकी है। मंगलवार को विश्विद्यालय से इंस्पेक्शन हेतु टीम आएगी। जिसके बाद आने वाले दिनों में जल्द ही इस कोर्स के एडमिशन शुरू हो जाएंगे। जिससे अब इलाके के विद्यार्थियों को इस पेशेवर पाठ्यक्रम हेतु भारत के अन्य राज्यों में नहीं जाना पड़ेगा।

महाविद्यालय प्रेस प्रवक्ता प्रोफेसर डॉ. चन्द्र मोहन ने बताया कि तेजी से बढ़ती डिजिटल दुनिया में पेशेवरों की मांग को देखते हुएए यह पाठ्यक्रम छात्रों को सोशल मीडिया मार्केटिंग, सर्च इंजन ऑप्टिमाइजेशन, सर्च इंजन मार्केटिंग, ईमेल मार्केटिंग, कंटेंट क्रिएशन, वेब एनालिटिक्स, ई कॉमर्स आदि आधुनिक टूल्स व तकनीकों का व्यावहारिक ज्ञान प्रदान करेगा। इस नवाचार पूर्ण पाठ्यक्रम का सुझाव प्राचार्य प्रोफेसर डॉ. जेएस मोर की ओर से दिया गया। उनका मानना है कि डिजिटल युग में प्रशिक्षित डिजिटल मार्केटिंग प्रोफेशनल्स की अत्यधिक मांग है और यह डिप्लोमा युवाओं को स्वरोजगार तथा बाजारोन्मुखी करियर की ओर अग्रसर करेगा।

इस कोर्स को अत्यंत महत्वपूर्ण और समयानुकूल बताया गया है। जिससे छात्रों को तकनीकी कौशल, ऑनलाइन विपणन रणनीतियां, स्टार्टअप या फ्रीलांस कार्यक्षेत्र में प्रवेश की बेहतर तैयारी मिल सकेगी। वाणिज्य विभाग के प्रोफेसर डॉ. अनीस यादव ने इस पाठ्यक्रम विवरण के बारे में जानकारी सांझा करते हुए कहा कि इस कोर्स की अवधि एक वर्ष है। इस कोर्स में पात्रता सभी संकायों के स्नातक विद्यार्थी आवेदन कर सकते हैं। कोर्स की मान्यता इंदिरा गांधी विश्वविद्यालयए मीरापुर रेवाड़ी से है।

पहल करेगी युवाकों को कौशल प्रदान

महाविद्यालय के एडमिशन के नोडल अधिकारी प्रोफेसर डॉ. सतीश सैनी ने बताया कि यह पहल युवाओं को आधुनिक, उद्योगोन्मुखी व रोजगारपरक कौशल प्रदान करने के लिए विभाग की प्रतिबद्धता को दर्शाती है। शिक्षा व उद्योग के मध्य की खाई को पाटने का कार्य करेगी। इस कार्यक्रम को लाने में पिछड़े जिले के विद्यार्थियों को आधुनिक शिक्षा से जोड़ने और शिक्षा का अलख जगाने में हरियाणा के मुख्यमंत्री नायाब सिंह सैनी, शिक्षामंत्री महिपाल सिंह व विधायक ओमप्रकाश यादव का जिला उच्चतर शिक्षा अधिकारी डॉ. पूर्ण प्रभा ने आभार व्यक्त किया।

खाद एवं आपूर्ति विभाग की कार्य प्रणाली पर सवाल, शिकायत किसी की, गाज दूसरे पर गिरी

हरिभूमि न्यूज ▶▶| मंडी अटेली

खाद एवं आपूर्ति विभाग में एक ऐसा मामला प्रकाश आया है कि शिकायत किसी डिपो धारक की थी और गाज़ किसी अन्य डिपो धारक पर गिरी है। जानकारी के अनुसार अटेली क्षेत्र के गांव राता कलां निवासी कुलदीप ने सीएम विंडो तथा खाद्य एवं आपूर्ति विभाग अटेली को शिकायत दी थी कि गांव राता कलां निवासी डिपो धारक ने 26 अप्रैल को सरसों का तेल जो बकाया था, वह डिपो धारक द्वारा नहीं दिया गया तथा मांगने पर गलत व्यवहार किया। शिकायत पर संज्ञान लेते हुए जिला एवं खाद्य आपूर्ति विभाग ने जांच के दौरान पाया कि पीओएस मशीन नंबर 108400600016 जो कि मुनीराम डिपो धारक राता कलां की है, जिसमें गत 26 अप्रैल का सरसों का तेल बकाया था, परंतु डिपो धारक द्वारा सरसों का तेल नहीं दिया गया। उक्त त्रुटियों को करके डिपो धारक ने हरियाणा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के आदेश 2022 के आदेशों की उल्लंघना की। डिपो धारक द्वारा उपरोक्त अनियमितता करके सरकारी हिदायातों की उलंघना करने पर कार्यालय द्वारा पत्र क्रमांकःआईडी डेक्स 2025/2613 दिनांक 12 मई 2025 को डिपो धारक की राशन सप्लाई निलंबित करते हुए उसे इस कार्यालय के पत्र क्रमांकःआईडी 2025/2796 को 23 मई द्वारा कारण बताओ नोटिस जारी किया गया। नोटिस का उत्तर प्रस्तुत किया गया, जो कि संतोषजनक नहीं पाया गया। जिसे डिपो धारक की अनियमितता मानी गई। हरियाणा सार्वजनिक वितरण प्रणाली के आदेश 2022 की विभिन्न धाराओं की उल्लंघना की गई है।

पत्र में दूसरे को दी चेतावनी

जिला खाद्य एवं आपूर्ति विभाग अधिकारी कुशल पाल बूरा ने सार्वजनिक वितरण प्रणाली आदेश 2022 शक्तियों का प्रयोग करते हुए सुंदरलाल डिपो धारक गांव भेडण्टी की समस्त प्रतिभूति जब्त तथा भविष्य के लिए व्यवहार ठीक रखने के लिए चेतावनी दी। उक्त पत्र में शिकायत कर्ता ने सीएम विंडो तथा खाद्य एवं आपूर्ति विभाग के समक्ष दी गई शिकायत में राता कलां डिपो धारक पर सरसों का तेल नहीं देने का आरोप लगाया था, जिस पर जांच के दौरान विभाग के अधिकारियों ने राता कलां निवासी मुनीराम डिपो धारक की पीओसी मशीन में सरसों का तेल जांच में बकाया पाया गया था, लेकिन कुछ अधिकारियों ने गाज सुंदरलाल डिपो धारक पर डाली, जो एक विभाग की कार्य प्रणाली पर सवालिया निशान लग रही है।

एक पेड़ की तरह है निवेश, अभी लगाएंगे तो भविष्य में देगा छाया

- निवेश की यात्रा शुरू कर रहे हैं तो जान लें कुछ जरूरी नियम
- सबसे पहले निवेश के लिए लक्ष्य लेकर चलें और रुकें नहीं
- हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं

निवेश मंत्रा

विनोद कौशिक

निवेश एक पेड़ की तरह है। यदि आप इस समय निवेश रूपी पौधा रोपेंगे तो यह बुढ़ापे में आपको छाया देगा और भविष्य को सुरक्षित रखेगा। अगर आप भी अपनी निवेश यात्रा शुरू करने जा रहे हैं या कर चुके हैं तो कुछ नियमों को अपने जीवन में उतार लें। इससे आप आसानी से अपने सपने को पूरा कर सकेंगे। अपने गोल पूरे कर सकेंगे। सबने इन्वेस्टमेंट यानी निवेश शब्द तो बहुत बार सुना होगा। चाहे परिवार की बातचीत, समाचार अपडेट या रोजमर्रा के जीवन में भी, लेकिन क्या आप कभी यह सोचने से रोके हैं कि इसका क्या मतलब है? सबसे सरल अर्थ में, इन्वेस्टमेंट आज पैसे, समय या ऊर्जा देने के बारे में है, आशा है कि यह भविष्य में कुछ और बढ़ेगा। कल्पना करें कि यह एक पौधा रोपने की तरह है, आप कोशिश करते हैं, इसे सावधानी से पोषण करते हैं, यह जानकर कि किसी दिन यह आपको छाया, फल या शायद कुछ सुंदरता भी प्रदान करेगा। यही इन्वेस्टमेंट यानी निवेश का मंत्र है। हमेशा लंबी अवधि के लिए निवेश करें और उसे हर साल बढ़ाते जाएं।

निवेश का महत्व

- इन्वेस्टमेंट आपके पैसे को महंगाई से बचा सकता है।
- आपको आय अर्जित करने में मदद कर सकता है।
- आपको अपने लॉन्ग-टर्म लक्ष्यों के करीब ला सकता है।
- समय के साथ अपनी कैश वैल्यू खोने के बजाय, इन्वेस्टमेंट आपको रियल वेल्थ

बनाने में मदद कर सकता है

- कंपाउंडिंग होती है-जहां आपका रिटर्न गुणा होता है और समय के साथ अपना रिटर्न जनरेट करना शुरू करता है।
- इसलिए, चाहे रिटायरमेंट के लिए बचत हो या उस ड्रीम वेकेशन, इन्वेस्टमेंट आपके सभी वर्तमान और भविष्य के लक्ष्यों को आसानी से पूरा कर सकता है।

निवेश से पहले यह जान लें

जोखिम सहिष्णुता: आप अपने इन्वेस्टमेंट के कुछ या सभी को खोने के विचार से कितना आरामदायक हैं?

समय सीमा: क्या आप शॉर्ट टर्म या लॉन्ग टर्म के लिए इन्वेस्ट करना चाहते हैं?

फाइनेंशियल लक्ष्य: आप अपने इन्वेस्टमेंट के माध्यम से क्या प्राप्त करना चाहते हैं?

विविधता: विभिन्न क्षेत्रों में अपने इन्वेस्टमेंट को फैलाकर जोखिम को मैनेज करने में मदद मिल सकती है, जैसे कि आपके सभी अंडे एक ही टोकरी में न डालें।

इसलिए करें इन्वेस्टमेंट

महंगाई से सुरक्षा: इन्वेस्टमेंट अक्सर महंगाई की तुलना में तेज़ी से बढ़ते हैं, जिससे आपके पैसे की वैल्यू को सुरक्षित रखा जाता है।

पैसिव आय जनरेट करें: कुछ इन्वेस्टमेंट, जैसे डिविडेंड-भुगतान स्टॉक, नियमित कैश फ्लो प्रदान कर सकते हैं।

फाइनेंशियल लक्ष्य प्राप्त करें: इन्वेस्टमेंट आपको बड़े जीवन की घटनाओं, जैसे घर खरीदना या आराम से रिटायर होना आदि के लिए बचत करने में मदद करता है। इन्वेस्ट करना शुरू करना कभी भी बहुत जल्दी नहीं है, जितनी जल्दी आप शुरू करते हैं, कंपाउंडिंग का लाभ मिलेगा।

आखिर क्या है निवेश

निवेश एक प्रक्रिया है, जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने पैसे को विभिन्न प्रकार की संपत्तियों या वित्तीय साधनों में लगाते हैं, जिससे उन्हें भविष्य में आय या लाभ प्राप्त हो सके। निवेश का उद्देश्य आमतौर पर अपने पैसे को बढ़ाना, आय अर्जित करना, या भविष्य के लिए बचत करना होता है। निवेश एक एसेट और/या एक आइटम है जो या तो अप्रिशिएशन प्राप्त करने या इनकम जनरेट करने के लिए अर्जित किया जाता है। इन्वेस्टमेंट में वृद्धि एक निश्चित अवधि में एसेट/आईटम के मूल्य में वृद्धि है। इससे स्टॉक खरीदना, रियल एस्टेट में इन्वेस्ट करना, गोल्ड खरीदना, या साइड बिजनेस शुरू करना भी हो सकता है। प्रत्येक विकल्प में वृद्धि की क्षमता होती है, विशेष रूप से अगर अच्छी तरह से मैनेज किया जाता है और हां, इसमें कुछ जोखिम शामिल हैं- वहां कोई आश्चर्य नहीं है, लेकिन ये इन्वेस्टमेंट वेल्थ-बिल्डिंग के अवसर प्रदान कर सकते हैं।

निवेश के प्रकार

1. **वित्तीय निवेश** : इसमें शेयर, बॉन्ड, म्यूचुअल फंड, और अन्य वित्तीय साधन शामिल हैं।
2. **वास्तविक निवेश** : इसमें अचल संपत्ति, सोना, और अन्य भौतिक संपत्तियां शामिल हैं।
3. **व्यवसायिक निवेश** : इसमें व्यवसाय शुरू करने या व्यवसाय में हिस्सेदारी खरीदने के लिए निवेश करना शामिल है।

निवेश के लाभ

1. **आय अर्जित करना** : निवेश से आय अर्जित करने का अवसर मिलता है।
2. **पैसे का बढ़ना** : निवेश से पैसे का मूल्य बढ़ सकता है।
3. **भविष्य के लिए बचत** : निवेश से भविष्य के लिए बचत करने में मदद मिलती है।
4. **विविधीकरण** : निवेश से पोर्टफोलियो का विविधीकरण होता है, जिससे जोखिम कम होता है।
5. **कैपिटल प्रिज़र्वेशन** : जब आप इन्वेस्ट करते हैं, तो आप अपने पैसे को सुरक्षित रखते हैं और समय के साथ वैल्यू को खोने से रोकते हैं।
6. **टैक्स लाभ** : कुछ इन्वेस्टमेंट आपकी टैक्स योग्य आय को कम करने में मदद कर सकते हैं, जो हमेशा बोनस होता है!

निवेश के जोखिम

1. **बाजार का जोखिम** : बाजार की स्थितियों में बदलाव से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
2. **क्रेडिट जोखिम** : उधारकर्ता के डिफ़ॉल्ट करने से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।
3. **लिक्विडिटी जोखिम** : निवेश को आसानी से बेचने में समस्या हो सकती है।
4. **जोखिम** : मुद्रास्फीति से निवेश का मूल्य प्रभावित हो सकता है।

ऐसे करें निवेश

1. **लक्ष्यों को परिभाषित करें** : सोचें कि आप अपने इन्वेस्टमेंट को प्राप्त करने के लिए क्या चाहते हैं।
2. **अपने जोखिम का आकलन करें** : सोचें कि आप नींद को खोए बिना कितना जोखिम ले सकते हैं।
3. **अपने इन्वेस्टमेंट चुनें**: आपके लिए सही महसूस करने वाले स्टॉक, बॉन्ड, रियल एस्टेट और फंड का मिश्रण चुनें।
4. **नियमित रूप से इन्वेस्ट करें**: हर महीने एक निश्चित राशि अलग रखने पर विचार करें. यह पहले खुद को भुगतान करने की तरह है।

ऐसे करता है काम

आप किसी कंपनी (एक एसेट) में शेयर खरीदने का निर्णय लेते हैं, जिसका आपको विश्वास है कि आपके पास एक आशाजनक भविष्य है। अगर कंपनी की वैल्यू बढ़ती है, तो आपके शेयरों की कीमत भी बढ़ती है या शायद आप किसी ऐसे क्षेत्र में भूमि (संपत्ति) का प्लॉट खरीदते हैं जिसे आप सोचते हैं कि समय के साथ महंगा हो जाएगा। दोनों मामलों में, आपका पैसा काम करने के लिए लगाया जाता है, और अगर चीज़ें अच्छी तरह से चलती हैं, तो यह आपको लगातार ध्यान दिए बिना लौटना लाता है।

ग्रीन एफडी : सुरक्षित निवेश के साथ पर्यावरण संरक्षण में भी करें योगदान

अभी सभी बैंक ग्रीन डिपॉजिट की सुविधा नहीं दे रहे हैं। फिर भी, कई बड़े सार्वजनिक और निजी क्षेत्र के बैंकों ने इस दिशा में कदम उठाया है। मोहित गांग के मुताबिक, एसबीआई, बैंक ऑफ इंडिया, एक्सिस बैंक, केनरा बैंक, सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, आईडीएफसी फर्स्ट बैंक, एयू स्मॉल फाइनेंस बैंक, इंडियन ओवरसीज बैंक और बैंक ऑफ बड़ौदा जैसे बैंक ग्रीन डिपॉजिट योजनाएं शुरू कर चुके हैं।

बचत

बिजनेस डेस्क

जलवायु परिवर्तन और प्रदूषण जैसी चुनौतियों से जूझ रही दुनिया अब निवेश के तरीकों में भी धीरे-धीरे बदलाव कर रही है। इन्हीं नए नए तरीकों के बीच भारत में अब एक नया फाइनेंशियल प्रोडक्ट तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। इस लोकप्रिय प्रोडक्ट को नाम दिया है ग्रीन डिपॉजिट। यह एक ऐसा निवेश विकल्प है, जो न केवल सुरक्षित और अच्छा रिटर्न देता है, बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी अहम भूमिका निभाता है। भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) ने जून 2023 में ग्रीन डिपॉजिट के लिए एक स्ट्रक्चर जारी किया था, जिसमें बैंकों को जमा पैसे को सिर्फ ग्रीन प्रोजेक्ट्स में लगाने की अनुमति दी गई है। इस प्रोजेक्ट्स में मुख्य रूप से सौर ऊर्जा, इलेक्ट्रिक गाड़ियां, पानी और वेस्ट मैनेजमेंट आदि शामिल होते हैं। ग्रीन डिपॉजिट एक सामान्य फिक्स्ड डिपॉजिट (एफडी) की तरह ही है, लेकिन इसका असर कहीं अधिक बड़ा और पॉजिटिव है। इसमें बैंकों को सालाना रिपोर्टिंग और थर्ड पार्टी ऑडिट जैसी पारदर्शिता की शर्तें पूरी करनी होती हैं, जिससे निवेशकों का भरोसा मजबूत होता है। स्टेट बैंक, एक्सिस, यूनियन बैंक जैसे कई बड़े बैंक इस विकल्प की पेशकश कर रहे हैं। अगर आप एक ऐसा निवेश चाहते हैं जो आपको आर्थिक लाभ के साथ-साथ धरती को भी लाभ पहुंचाए, तो ग्रीन डिपॉजिट एक समझदारी भरा कदम हो सकता है।

यह कैसे करता है काम

ग्रीन डिपॉजिट में भी निवेशक अपने पैसे को बैंक में एक निश्चित समय के लिए एफडी की तरह जमा करते हैं, और बदले में उन्हें उसका ब्याज मिलता है, लेकिन इस योजना की खासियत यह है कि जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल केवल उन परियोजनाओं में किया जाता है, जो पर्यावरण के लिए फायदेमंद हों। इन परियोजनाओं में सौर और पवन ऊर्जा, इलेक्ट्रिक वाहन, जलवायु परिवर्तन से बचने के लिए हो रहे काम, पानी, वेस्ट मैनेजमेंट और ग्रीन बिल्डिंग आदि शामिल हो सकते हैं। बैंकिंग एक्सपर्ट कहते हैं, "जब कोई व्यक्ति या संस्था ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करता है, तो बैंक उस पैसे को ऐसी परियोजनाओं के लिए लोन देने या निवेश करने में उपयोग करता है।

ऐसे समझें उदाहरण

उदाहरण के लिए, यह पैसा सौर ऊर्जा प्लांट बनाने, इलेक्ट्रिक गाड़ियां बनाने आदि को बनाने या फिर उसके लिए रिसर्च में इस्तेमाल किया जा सकता है। भारतीय रिजर्व बैंक ने यह सुनिश्चित करने के लिए सख्त नियम बनाए हैं कि इन फंड्स का उपयोग केवल इन्हीं चीजों के लिए ही हो। बैंकों को हर साल इन फंड्स के उपयोग और उनके होने वाले पर्यावरणीय प्रभाव की जानकारी सार्वजनिक करनी होती है।

क्या कहते हैं जानकार

ग्रीन डिपॉजिट में निवेश की प्रक्रिया एफडी की तरह ही होती है। निवेशक को एक निश्चित पैसा (जो आमतौर पर 5,000 रुपये से शुरू होकर 10 करोड़ रुपये तक हो सकती है) जमा करना होता है। जमा करने का समय और ब्याज दर बैंक के नियमों पर निर्भर करती है। इस पैसे को डीआईसीजीसी के तहत बीमा किया जाता है, जिससे निवेशक का पैसा सुरक्षित रहता है।

नियमों और पारदर्शिता

दूसरा अंतर नियमों और पारदर्शिता में है। ग्रीन डिपॉजिट पर भारतीय रिजर्व बैंक की पूरी नजर रहती है और इसके लिए अलग से दिशानिर्देश हैं। इसकी वजह से बैंकों को फंड्स के उपयोग की पूरी जानकारी देने और हर साल ऑडिट करवाना पड़ता है। इसके विपरीत, एफडी में ऐसी कोई शर्त या पारदर्शिता की जरूरत नहीं होती। ब्याज दरों की बात करें तो ग्रीन डिपॉजिट की दरें सामान्य एफडी के बराबर या कभी-कभी थोड़ी अधिक हो सकती हैं, क्योंकि बैंक पर्यावरण के प्रति जागरूक निवेशकों को आकर्षित करने के लिए कभी-कभी अच्छी दरें ऑफर करते हैं। एक और जरूरी अंतर नैतिक प्रभाव का है। ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करके व्यक्ति पर्यावरण संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से निपटने में योगदान देता है, जो इसे एक नैतिक और जिम्मेदार निवेश विकल्प बनाता है। सामान्य एफडी में ऐसा कोई पर्यावरणीय या सामाजिक प्रभाव नहीं होता।

ग्रीन डिपॉजिट के क्या फायदे

ग्रीन डिपॉजिट का सबसे बड़ा फायदा यह है कि यह निवेशकों को पर्यावरण संरक्षण में योगदान देने का मौका देता है। अगर आप जलवायु परिवर्तन या प्रदूषण जैसी समस्याओं को लेकर चिंतित हैं, तो यह योजना आपके पैसे को सही दिशा में लगाने का एक तरीका है। इसके अलावा, इसकी ब्याज दरें सामान्य एफडी की तुलना में प्रतिस्पर्धी होती हैं, जिससे निवेशक को आर्थिक लाभ भी मिलता है। यह योजना उन लोगों के लिए भी खास है, जो अपने निवेश को पर्यावरण, सामाजिक और शासन मानकों के आधार पर करना चाहते हैं। ग्रीन डिपॉजिट के जरिए निवेशक अपने पोर्टफोलियो में विविधता ला सकते हैं और साथ ही पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारी भी निभा सकते हैं। बैंकों द्वारा हर साल दी जाने वाली रिपोर्ट और तीसरे पक्ष के ऑडिट से निवेशकों को यह भरोसा रहता है कि उनका पैसा सही जगह पर इस्तेमाल हो रहा है। साथ ही, डीआईसीजीसी के तहत बीमा होने से यह निवेश पूरी तरह सुरक्षित भी है।"

एफडी से कितना अलग है ग्रीन डिपॉजिट

ग्रीन डिपॉजिट और एफडी में कई समानताएं हैं। हालांकि, कुछ बुनियादी अंतर दोनों को अलग बनाते हैं। सबसे बड़ा अंतर यह है कि ग्रीन डिपॉजिट में जमा किए गए पैसे का इस्तेमाल सिर्फ पर्यावरण को लाभ पहुंचाने वाले परियोजनाओं में किया जाता है, जबकि एफडी में जमा पैसे का इस्तेमाल बैंक अपने सामान्य कारोबार, लोन देने या दूसरे निवेश में उपयोग कर सकता है। इस तरह ग्रीन डिपॉजिट में निवेश करने वाला हर व्यक्ति यह दावा कर सकता है कि उसका पैसा पर्यावरण से जुड़ी परियोजनाओं के लिए हो रहा है।

जवानी में कर लें इतना निवेश की बुढ़ापे में न गिननी पड़े परेशानियां

- रूल ऑफ 70 से जानिए बुढ़ापे में कितना पैसा होगा काफी
- आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका
- जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल होगा
- युवावस्था से ही रिटायरमेंट को मजबूत फंड बनाना शुरू करें
- अच्छा फंड भविष्य में आर्थिक तंगी से बचाएगा, जीवन आरामदायक बनेगा

जानकारी

बिजनेस डेस्क

अगर आप भी रिटायरमेंट प्लानिंग कर रहे हैं तो जरा ध्यान दें। आप जितना जल्दी निवेश शुरू करेंगे। उतना ही बुढ़ापे में सुरक्षित होंगे। इसलिए जरूरी है कि जवानी में इतना निवेश कर लें कि बुढ़ापे में परेशान न होना पड़े। इसके लिए आप रूल ऑफ 70 के फार्मूले को भी फॉलो कर सकते हैं। इससे पता चल जाएगा कि बुढ़ाप अच्छे से काटने के लिए आपको कितने धन की जरूरत होगी। आज की अर्थव्यवस्था में पैसा सबसे बड़ी जरूरत बन चुका है। अगर जवानी में गलत फैसले लिए गए, तो बुढ़ापा मुश्किल हो सकता है। इसलिए जरूरी है कि युवावस्था से ही रिटायरमेंट के लिए मजबूत फंड बनाना शुरू करें, ताकि भविष्य में आर्थिक तंगी से बचा जा सके और जीवन आरामदायक बना रहे।

हमेशा महंगाई का ध्यान रखें

आप भी सोचते होंगे कि अगर आपके पास एक करोड़ रुपये हों, तो जिंदगी की सारी ज़रूरतें पूरी हो जाएंगी, लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यही रकम आने वाले वक्त में आपके लिए कितनी मायने रखेगी। आज जो रकम बड़ी लगती है, वो कल को शायद उतनी काम की न हो। महंगाई हर साल धीरे-धीरे बढ़ती रहती है और इसके साथ हमारी जरूरतों की कीमत भी। ऐसे में अगर आपने भविष्य की प्लानिंग सही से नहीं की, तो रिटायरमेंट के बाद दिक्कतें हो सकती हैं। कई बार हम यह मान लेते हैं कि जितना पैसा आज हमें काफी लग रहा है, वही आगे भी काफी रहेगा, लेकिन असलियत इससे बिल्कुल अलग है। इसलिए जरूरी है कि आप आज ही यह समझें कि आपकी रकम भविष्य में कितनी टिक पाएगी और उसी के हिसाब से अपनी बचत और निवेश की योजना बनाएं।

ऐसे जानें 'रूल ऑफ 70'

आपके पैसों की वैल्यू भविष्य में कितनी रह जाएगी, यह जानने के लिए 'रूल ऑफ 70' एक सरल तरीका है। इसमें आपको बस मौजूदा महंगाई दर जाननी होती है। जब आप 70 को उस महंगाई दर से भाग देंगे, तो जो संख्या निकलेगी, वह यह बताएगी कि कितने साल में आपके पैसों की आधी हो जाएगी। उदाहरण के लिए, अगर महंगाई दर 7% है, तो 70/7=10 साल। यानी 10 साल में आपके 1 करोड़ की वैल्यू 50 लाख जैसी हो जाएगी।

क्यों जरूरी है सही फाइनेंशियल प्लानिंग

लोग अक्सर सोचते हैं कि एक तय रकम जोड़ लेना ही काफी है, लेकिन वे महंगाई के असर को नजरअंदाज कर देते हैं। केवल सेविंग्स करना काफी नहीं है, आपको यह भी समझना होगा कि वो रकम भविष्य में क्या वैल्यू रखेगी। रूल ऑफ 70 जैसे सिंपल फॉर्मूलों से आप अपनी योजना को रियलिस्टिक बना सकते हैं। इससे आपको साफ नजर आएगा कि भविष्य में कितना पैसा वाकई जरूरी होगा।

स्मार्ट प्लानिंग

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए युवावस्था से ही बचत और निवेश शुरू करें। हर महीने आय का कम से कम 20% रिटायरमेंट फंड में डालें। एसआईपी, पीपीएफ, और म्यूचुअल फंड जैसे विकल्प अपनाएं। महंगाई दर को ध्यान में रखते हुए फंड टारगेट तय करें। रूल ऑफ 70 से समझें पैसों की घटती वैल्यू और उसी अनुसार लॉन्ग टर्म प्लान तैयार करें।

सही लक्ष्य तय करें

बुढ़ापे में आर्थिक तंगी से बचने के लिए जरूरी है कि आप जल्द से जल्द निवेश शुरू करें। नियमित रूप से अपने फाइनेंशियल टारगेट्स की समीक्षा करें। बाजार की स्थितियों और महंगाई के हिसाब से अपनी रणनीति में बदलाव करते रहें। याद रखें, समय के साथ रुपये की वैल्यू घटती है, लेकिन सही प्लानिंग से आप अपनी भविष्य की जरूरतों को पूरा कर सकते हैं।

विकल्पों का विश्लेषण

निवेश की प्लानिंग एक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति या संगठन अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए निवेश रणनीति तैयार करते हैं। इसमें निवेश के उद्देश्यों, जोखिम सहनशक्ति, समय सीमा, और निवेश विकल्पों का विश्लेषण करना शामिल है। निवेश के उद्देश्यों को निर्धारित करना, जैसे कि आय अर्जित करना, पैसे का बढ़ना, या भविष्य के लिए बचत करना। निवेश की प्लानिंग एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है जो व्यक्ति या संगठन को अपने वित्तीय लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद कर सकती है।

माना जा रहा है कि जब प्रतिस्पर्धा सीमित होती हैतो मूल्य निर्धारण पारदर्शी नहीं रह जाता। इससे परियोजना की लागत अनावश्यक रूप से बढ़ने की आशंका रहती है। ईपीएफओ के टेंडर में अगर अधिक से अधिक कंपनी हिस्सा लेगी तो इसका लाभ उन्हें ही होगा और प्रतिस्पर्धा की वजह से ईपीएफओ को कम लागत में एक बेहतर सेवा प्रदाता कंपनी की सेवा मिलेगी।

ईपीएफओ के डिजिटल प्लेटफॉर्म में हो रहा बदलाव, आखिर क्या होगा असर

बिजनेस डेस्क

देश के 27 करोड़ से अधिक कामगारों की बचत की संरक्षक संस्था के रूप में कार्य कर रही कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) ने 14 जुलाई 2025 को अपने आईटी सिस्टम (ईपीएफओ प्लेटफार्म) पर व्यापक बदलाव की तैयारी शुरू कर दी है। स्वभाविक है कि इस बदलाव से लोगों पर व्यापक असर भी दिखाई देगा। कुछ राहत मिलेगी तो कुछ खतरे भी बढ़ सकत हैं। ईपीएफओ के इस बदलाव से जुड़ी हालिया प्रक्रिया विशेषकर एजेंसी के चयन हेतु जारी एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट(ईओआई) को लेकर विशेषज्ञों और उद्योग जगत ने पारदर्शिता, निष्पक्षता और संभावित पक्षपात को लेकर गहरी चिंता जताई है। एक्सप्रेशन ऑफ इंटरेस्ट दस्तावेज़ में एक प्रमुख शर्त यह है कि बोलीदाता ने प्रस्तावित कोर बैंकिंग सोल्यूशन (सीबीएस) को किसी अनुसूचित कॉर्मसियल बैंक में लागू किया हो। पहली नजर में यह एक सामान्य, अनुभव आधारित मानदंड लगता है, लेकिन विशेषज्ञों के अनुसार यह शर्त ईपीएफओ की वास्तविक आवश्यकताओं के अनुरूप नहीं है।

खातों का रख-रखाव, अंशदान प्रबंधन, पेंशन का वितरण आदि है। इसके लिए एक मजबूत, स्केलेबल और यूज़र-फ्रेंडली डिजिटल प्लेटफॉर्म जरूरी है, लेकिन इसके लिए कोर बैंकिंग सॉल्यूशन (सीबीएस) की अनिवार्यता अप्रासंगिक मानी जा रही है। इसका कारण ये है कि ईपीएफओ का काम कोर बैंकिंग से संबंधित नहीं है। ईओआई की भाषा से यह प्रतीत होता है कि बैंकिंग क्षेत्र को सेवा देने वाली कंपनी को प्राथमिकता दी जा रही है। प्री-बिड मीटिंग में शामिल कंपनियों ने यह भी ये सवाल उठाये किया कि दस्तावेज़ में वर्णित तकनीकी विशिष्टताएँ एक कंपनी विशेष की क्षमताओं से काफी मेल खाती हैं। कम्पनियों ने ईरपीएफओ पोर्टल पर क्वेरी जेनेरेट कर अपनी चिंता व्यक्त की लेकिन ईपीएफओ ने कंपनियों के सभी आपत्ति को दरकिनार कर दिया।

नवाचार की राह में बाधा

ईओआई की शर्तों से कई प्रतिष्ठित कंपनियां इस काम के लिए बिड की करने की प्रक्रिया से बाहर हो सकती हैं, खासकर जिन्होंने डिजिटल गवर्नेंस और सार्वजनिक सेवाओं के लिए बेहतरीन समाधान विकसित किए हैं लेकिन बैंकिंग सीबीएस पर काम नहीं किया है। ईओआई बैठक में भाग लेने वाली प्रमुख कंपनियां टीसीएस, इंफोसिस, विप्रो, सीआईपीएल, एडब्ल्यूएस, एचसीएल सॉफ्टवेयर और फिन्सिल थीं। जबकि केवल एक-दो कंपनियां ही सीबीएस का अनुभव रखती हैं।

इस पर क्या है विशेषज्ञों की राय

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं

ईपीएफओ कोई बैंक नहीं है। इसकी कार्यप्रणाली सार्वजनिक सेवा मंच जैसी है। ऐसे में बैंकिंग सीबीएस की अनिवार्यता तकनीकी दृष्टि से गैरज़रूरी और रणनीतिक रूप से भ्रामक है। **-पवन दुग्गल, डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर एवं सायबर सुरक्षा विशेषज्ञ**

उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं

यह आरएफपी किसी खास उत्पाद के लिए रिवर्स इंजीनिरिड लगती है। ये बहुत ही रिस्ट्रीक्टिव है एवं इसका उद्देश्य समाधान ढूंढना नहीं, बल्कि समाधान में किसी ख़ास बोलीदाता (बिडर) को लाभ पहुंचाना है। **-अनूज प्रकाश अवस्थी, टेक्नोलॉजी एडवोकेट, सुप्रीम कोर्ट।**

नवाचार-विरोधी भी

- डिजिटल एवं आईटी के काम के लिए टेंडर की प्रक्रिया में हिस्सा लेने वाली एक प्रमुख कंपनी एमनेक्स टेक्नॉलाजी का कहना है कि यह सिर्फ खराब खरीद प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह नवाचार-विरोधी भी है। यह सरकार के 'मेक इन इंडिया' और 'ओपन इनोवेशन' के मूल सिद्धांतों के भी खिलाफ है।
- वहीं वित्त मंत्रालय में वरिष्ठ सलाहकार के पद पर काम कर चुके एक अधिकारी ने बताया कि टेंडर प्रक्रिया में किसी विशेष शर्त को जोड़ना या किसी खास कंपनी को फायदा पहुंचाने के लिए शर्तों का निर्धारण जीएफआऱ एवं सीवीसी के नियमों का उल्लघन है। उनके मुताबिक, अगर प्रतियोगिता का दायरा सीमित होगा, तो बोली की कीमतें बाजार के अनुरूप नहीं होंगी।

ईपीएफओ के लिए आगे की राह

- ईओआई जमा करने की अंतिम तिथि जैसे-जैसे नज़दीक आ रही है, ईपीएफओ पर यह दबाव बढ़ रहा है कि वह इस प्रक्रिया की समीक्षा करे, और योग्यताओं को कार्य-आधारित और समाधान-उन्मुख तरीके से परिभाषित करे। साथ ही इस प्रक्रिया मेंतकनीकी रिप्रजेंटेशन को प्रमुखता दी जाए। मूल्यांकन की प्रक्रिया में विविध पारदर्शी मानदंड जोड़े जाएं साथ ही पूरी प्रक्रिया में निष्पक्ष दृष्टिकोण अपनाया जाए।

सैनी क्षत्रिय सभा के चुनावों को लेकर समाज के लोगों में असमंजस

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

सैनी क्षत्रिय सभा के चुनावों को लेकर समाज के लोगों में असमंजस की स्थिति बनी हुई है, जिस कारण सभा की निर्तमान कार्यकारिणी द्वारा चुनाव अधिकारी लगाया जाता, दूसरी तरफ जिला रजिस्ट्रार द्वारा अपनी ओर से सभा पर प्रशासक लगाया जाना है। दोनों के द्वारा ही चुनाव प्रक्रिया शुरू की हुई है। इस स्थिति को लेकर सभा के सदस्य कुलदीप द्वारा जिला रजिस्ट्रार से आरटीआई के माध्यम से जानकारी मांगी जिसमें स्पष्ट किया गया कि सभा के चुनाव जिला रजिस्ट्रार की ओर से नियुक्त प्रशासक सह रिटर्निंग अधिकारी द्वारा ही करवाए जाएंगे।

बता दें कि सैनी क्षत्रिय सभा कार्यकारिणी की तरफ से चुनाव को लेकर 13 जून तक वोट बनाने का काम किया गया। इस दौरान समाज के 2588 मतदाताओं ने वोट बनवाने के लिए अपना आवेदन किया तथा 265 वोट पहले से आजीवन थे। इसके बाद सभा भवन में नए आए आवेदन पत्रों की जांच के दौरान भवन को अंदर से बंद करके जांच करने पर रोष जताया था तथा बाद में कुछ सदस्यों ने एक शिकायत जिला रजिस्ट्रार को की थी। इस पर जिला रजिस्ट्रार की ओर से जून माह में दो बार वीसी के माध्यम से दोनों पक्षों की सुनवाई करते हुए एक जुलाई को सभा पर प्रसार विशेषज्ञ, हरियाणा पशु विज्ञान केंद्र रिवासा से डॉ. योगेन्द्र सिंह यादव को प्रशासक सह रिटर्निंग अधिकारी नियुक्त किया था।

चार्ज लेने गए तो सभा द्वारा नियुक्त मिले चुनाव अधिकारी: इसके बाद जिला रजिस्टार की ओर से नियुक्त प्रशासक सह रिटर्निंग अधिकारी चार्ज लेने गए तो उन्हें चार्ज नहीं मिला और फिर बाद में सभा द्वारा नियुक्त चुनाव अधिकारी मिले जिन्होंने सभा द्वारा सर्वसम्मति से उन्हें चुनाव अधिकारी बनाने की बात कही। इसके बाद सूचना जिला रजिस्ट्रार को भेजी गई। इसके बाद प्रशासक डॉ. योगेन्द्र कुमार ने 14 जुलाई को सभा भवन में सभा सदस्यों की सूची ऑनलाइन निकलवाकर चस्पा करते हुए 31 जुलाई तक उन पर दावे व आपत्तियां मांग ली।

चुनाव कितने वोटों में होंगे अभी

समाज के लोगों की मांग है कि सभा द्वारा बनाए गए 2588 तथा आजीवन 265 सदस्यों में ही सभा के चुनाव होने चाहिए। सभा प्रशासक को सभा का चार्ज नहीं मिलने के कारण उनके पास कोई सूची व रिकार्ड नहीं है। ऐसे में प्रशासक द्वारा जिला रजिस्ट्रार की ओर से मिले दिशा-निर्देश के आधार पर सभा की ऑनलाइन सूची को ही चुनाव का आधार बना लिया है। अब इस 588 की सूची में 265 ही वोट स्थाई है शेष बीते चुनाव में अस्थाई थे जिस कारण से उनका कटने की पूरी संभावना जताई जा रही है। अगर प्रशासन चुनाव करवाता है तो यह तय है कि चुनाव 265 में ही होगा। पूर्व में भी चुनाव एक 174 वोटों में हो चुका है।

आरटीआई में यह मिली जानकारी

सभा सदस्य कुलदीप द्वारा सैनी क्षेत्रिय सभा में जारी दो अलग-अगल आम सूचनाओं की वैधता, प्रक्रिया की पादर्शिता तथा सक्षम अधिकारी की स्थिति के संबंध में आरटीआई के माध्यम से मांगी गई सूचना पर सक्षम अधिकारी द्वारा दी गई। सूचना में बताया गया कि कार्यालय रिकार्ड के अनुसार हरियाणा पशु विज्ञान केन्द्र रिवासा के प्रसार विशेषज्ञ डॉ. योगेंद्र सिंह यादव को सैनी क्षेत्रिय सभा महेन्द्रगढ़ में प्रशासक-कम-चुनाव अधिकारी नियुक्त किया गया है तथा इसके द्वारा की गई चुनाव प्रक्रिया ही वैध मानी जाएगी। प्रशासक द्वारा की गई कार्यवाही ही वैध होगी।

बीजेआरडी स्कूल में धूमधाम से मनाया शिवरात्रि पर्व

महेंद्रगढ़। बीजेआरडी विद्यालय में शिवरात्रि के पर्व पर रंगारंग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डायरेक्टर राजपाल व चेयरपर्सन शीला दीप प्रज्वलित करके किया तथा विद्यालय के सीईओ रमेश ने भगवान शिव को पुष्प अर्पित किया। कार्यक्रम की शोभा बढ़ाते हुए नन्हे मुन्ने बच्चों ने शिव भजन प्रस्तुत किया। वही मोक्ष, शौर्य ,युवान ने शिव का रूप धारण कर सभी का मन मोह लिया। माता पार्वती के रूप में चित्रा, मिष्ठी,चेष्टा, भाविका, सोनम ,हर्षिता, रिया, नैंसी ने नृत्य प्रस्तुत किया। कावड़ नाटक भी प्रस्तुत किया। विद्यालय के डायरेक्टर राजपाल यादव ने बच्चों को प्रोत्साहित किया और उन्होंने बच्चों को समय-समय पर इस प्रकार के कार्यक्रम करते रहने को कहा ताकि हम सभी को अपने उत्सव में परंपरा के बारे में ज्यादा से ज्यादा पता रहे। चेयरपर्सन शीला ने कहा कि सनातन धर्म में सावन शिवरात्रि का खास महत्व है। यह पर्व देशभर में धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन देवों के देव महादेव और मां पार्वती की विशेष पूजा की जाती है। पूजा के समय भगवान शिव का जलाभिषेक और रुद्राभिषेक किया जाता है। भक्तजन दूध, दही, जल, घी, शहद और गंगाजल से देवों के देव महादेव का अभिषेक किया जाता है।

सरस्वती स्कूल भोजावास ने चलाया पौधरोपण अभियान

नांगल चौधरी। सरस्वती पब्लिक स्कूल भोजावास में एक पौधा प्रकृति के नाम पौधारोपण अभियान चलाया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य राजेश कुमार ने की। जिसमें संस्था एमडी अमित यादव मुख्य रूप से मौजूद रहे। उन्होंने विद्यार्थियों को निःशुल्क पौधे वितरण करके नियमित रूप से सिंचाई व देखभाल करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि पौधों से परोपकार का संदेश मिलने के साथ प्रकृति को प्राणदायी ऑक्सीजन मिलती है। जीव जंतु व मनुष्यों को दैनिक उपयोगी सामग्री भी पौधों से ही उपलब्ध होती है। बावजूद अधिकांश लोग हरे पेड़ों की सुरक्षा को लेकर गंभीर नहीं और निजी स्वार्थों को पूरा करने के लिए अंधाधुंध हरियाली की कटाई कर रहे हैं। दूसरी तरफ विकास कार्यों से दैनिक जीवनशैली विकसित हुई है, लेकिन पर्यावरण प्रदूषित हो गया, क्योंकि सड़क व भवन निर्माण के लिए हर साल लाखों पौधे उखाड़ दिए जाते हैं। ऐसे में प्रकृति के आस्तित्व को खतरा उत्पन्न होने लगा है। उन्होंने प्रत्येक विद्यार्थी को हर साल एक पौधा अवश्य लगाने का संदेश दिया। इससे मानसिक सकून मिलने के साथ प्रकृति से प्रेम बढ़ेगा और पर्यावरण में स्वच्छता आएगी। इसके बाद शिक्षक स्टॉफ ने स्कूल के प्रांगण में एक एक पौधा लगाया तथा विद्यार्थियों को घर पर रोपण के लिए पौधे मुहैया कराए।

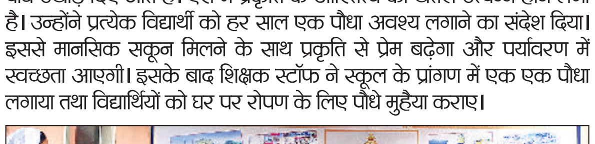

राव जयराम स्कूल में अंग्रेजी प्रश्नोत्तरी स्पर्धा आयोजित

महेंद्रगढ़। अटेली रोड पर स्थित राव जयराम सीनियर सैकेंडरी स्कूल में प्रातःकालीन प्रार्थना सभा के दौरान एक रोचक और ज्ञानवर्धक अंग्रेजी प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अंग्रेजी विभाग से अंजू बाला और कृष्णा कुमारी द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में मुख्यातिथि राव जयराम शिक्षण संस्थान के निदेशक सुरेन्द्र यादव थे। प्रतियोगिता में कैप्टन हरिसिंह यादव व कुमारी दीपा को निर्णायक मंडल में शामिल रही। इस प्रतियोगिता में तीन अलग-अलग हाउस एपीजे अब्दुल कलाम हाउस, सुभाष चंद्र बोस हाउस और रवींद्रनाथ टैगोर हाउस से कुल 18 विद्यार्थियों ने भाग लिया। हर टीम में छह-छह प्रतिभागी शामिल थे। यह क्विज प्रतियोगिता पांच राउंड्स में संपन्न हुई, जिनमें प्रत्येक राउंड 10 अंकों का था। प्रतियोगिता में सुभाष चंद्र बोस हाउस की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इस विजेता टीम में दिव्या, जानवी, पलक, हर्षिता, दीक्षा और रिया शामिल थी। द्वितीय स्थान पर एपीजे अब्दुल कलाम हाउस की टीम रही जिसमें तानिया, जिया, राशि, अनुषका, सोनम और लोकेश शामिल थे। तीसरा स्थान रवींद्रनाथ टैगोर हाउस की टीम को प्राप्त हुआ। इस टीम में कनिष्का, शिवानी, पार्थ, पायल, खुशी और चाहत आदि प्रतिभाशाली छात्र शामिल थे। मुख्यातिथि संस्थान के निदेशक सुरेन्द्र यादव ने प्रतियोगिता का अवलोकन करते हुए छात्रों के प्रदर्शन की प्रशंसा की।

हैप्पी स्कूल में प्रतियोगिता के विजेताओं को किया सम्मानित

महेंद्रगढ़। शहर के डुलाना रोड स्थित हैप्पी एवरग्रीन सीनियर सेकेंडरी स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताओं में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले विद्यार्थियों के सम्मान में एक समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के तौर पर विद्यालय के प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल और मैनेजर चंचल अग्रवाल तथा विशिष्ट अतिथि के तौर पर विद्यालय के प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल और सभी विंग प्रभारियों के साथ विद्यार्थियों के अभिभावक भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन अंग्रेजी अध्यापक म्युरिश शर्मा द्वारा किया गया। जेईई मेंस 2025 में उत्तीर्ण होने वाले विद्यार्थी सृष्टि गोयल पुत्री मुकेश गोयल, तनिष्क पुत्र इंद्रजीत, सौरव पुत्र सुनील कुमार और आदित्य पुत्र महेश कुमार, जेईई एडवांस्ड 2025 में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले छात्र हितांश अग्रवाल पुत्र सुनील कुमार,आर्यन सिंह पुत्र नवनीत, दिव्या पुत्री रवि प्रकाश, सीयूईटी में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाली छात्रा सिद्धि गोयल पुत्री विकास गोयल, नीट यूजी 2025 में बेहतरीन प्रदर्शन करने वाले छात्र अभिषेक पुत्र पूर्णलाल, केशव पुत्र रमेश कुमार, सीए आईपीसीसी में अपनी प्रतिभा दिखाने वाले विद्यार्थी ईशा अग्रवाल पुत्र रमेश अग्रवाल, युद्धवीर पुत्र वेद प्रकाश, ऋषिका पुत्री गोविंद, कीर्ति गोयल पुत्री अनुज गोयल, चिराग पुत्र राजेश अग्रवाल, लोकेश पुत्र सुरेश नारदिया, घनश्याम पुत्र सुरेश कुमार और आशीष पुत्र राजेंद्र सिंह वहीं दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में सराहनीय प्रदर्शन करने वाली छात्रा जीविका पुत्री शशिकांत गोयल और प्राची पुत्री दीपक को मोमेंटो देकर प्राचार्य डॉ. जेएस कुंतल तथा प्रबंध निदेशक मनीष अग्रवाल के द्वारा सम्मानित किया गया।

बीआर स्कूल सेहलंग में मनाया सावन महोत्सव

महेंद्रगढ़। गांव सेहलंग स्थित बीआर आदर्श सीनियर सेकेंडरी स्कूल में पारंपरिक उल्लास और सांस्कृतिक धरोहर को संजोते हुए सावन महोत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य अतिथि नगर पालिका उपप्रधान मंजू कौशिक रही। जिनका स्वागत विद्यालय के चेयरमैन हरीश भारद्वाज, प्राचार्या ज्योति भारद्वाज व विद्यालय परिवार ने पुष्पगुच्छ व तिलक के साथ किया। कार्यक्रम की शुरूआत मां सरस्वती व भगवान शिव की वंदना से हुई। विद्यालय की छात्राओं द्वारा प्रस्तुत लोक नृत्य, गीत, व सावन की झूले संस्कृति ने सभी उपस्थित जनों को मंत्रमुग्ध कर दिया। इस सावन मेले में विद्यार्थियों ने विभिन्न प्रकार की स्टॉल्स लगाई, जिनमें प्रमुख रूप से चूड़ी, टैटू, रंगोली, खाने की स्टॉल में गोलगप्पे, भेलपुरी, सैंडविच तथा खेल स्टॉल में रिंग टॉस, टारगेट बोर्ड, फ्लिप द बॉटल व मेमोरी गेम ने मेले के आनंद को और बढ़ा दिया। मंजू कौशिक ने कहा कि सावन जैसे पारंपरिक त्योहारों से बच्चों में सांस्कृतिक जुड़ाव और सामाजिकता की भावना उत्पन्न होती है। विद्यालय का यह प्रयास अत्यंत सराहनीय है।

यदुवंशी स्कूल में क्विज प्रतियोगिता आयोजित

महेंद्रगढ़। शहर के बुचौली रोड स्थित यदुवंशी स्कूल में शनिवार को कक्षा छठीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों के लिए विशेष साप्ताहिक गतिविधि के तहत क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें कक्षा छठीं से आठवीं तथा नौवीं से बारहवीं तक के छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों में सामान्य ज्ञान, तर्कशक्ति एवं त्वरित निर्णय क्षमता का विकास करना था। प्रतियोगिता को रोचक और ज्ञानवर्धक बनाने के लिए विषयवार प्रश्नों का चयन किया गया। प्राचार्य पवन कुमार ने कहा कि प्रतियोगिताएं केवल जीतने का माध्यम नहीं होतीं, बल्कि वह आत्मविश्वास एवं ज्ञान को मजबूत करने का अवसर भी होती हैं। आज के विद्यार्थी कल के निर्माता है, और इस तरह की गतिविधियां उन्हें नेतृत्व के लिए तैयार करती हैं। ग्रुप के चेयरमैन एवं पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य केवल किताबी ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि हम विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास में विश्वास रखते हैं। इस अवसर पर वाइस चेयरमैन एडवोकेट कर्ण सिंह यादव, वाइस चेयरपर्सन संगीता बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

विद्या भारती स्कूल में शतरंज प्रतियोगिता आयोजित

नारनौल। अंतर्राष्ट्रीय शतरंज दिवस के अवसर पर विद्या भारती पब्लिक स्कूल निजामपुर में शतरंज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका शुभारंभ संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव व वाइस चेयरपर्सन डॉ. उषा यादव ने किया। यह प्रतियोगिता दो वर्ग में आयोजित की गई। छात्र वर्ग में दीपक पुत्र राजेन्द्र तथा छात्रा वर्ग में निकिता सोनी पुत्री अनिल सोनी ने जीत हासिल की। संस्था के चेयरमैन एडवोकेट राजकुमार यादव ने विजेता खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य विनोद यादव ने बताया कि विद्यालय में पढ़ाई के साथ-साथ खेलकूद व अन्य गतिविधियों का भी आयोजन समय-समय पर होता रहता है, जो कि बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए अति आवश्यक है। इस मौके पर विद्यालय के प्रबंधक निदेशक एडवोकेट पीयूष यादव, निदेशका डॉ. रविन्द्रा यादव, प्राचार्य विनोद यादव, उपप्राचार्य सपना मल्होत्रा, किड्स ब्लॉक इंचार्ज विजय सोनी आदि मौजूद थे।

आरपीएस में मेधावी प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित

महेंद्रगढ़। आरपीएस विद्यालय में होनहार बच्चों का अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालय की प्रतिभावान विद्यार्थियों को स्मृति चिह्न व प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान विद्यालय के बच्चों द्वारा भव्य सांस्कृति कार्यक्रम ने सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम में आरपीएस ग्रुप सीईओ इंजी. मनीष राव मुख्यातिथि व अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. किशोर तिवारी ने की। इस दौरान उपस्थित अभिभावकों ने बच्चों के सर्वांगीण विकास व उनकी सफलता का श्रेय आरपीएस को देते हुए कहा कि आज आरपीएस वास्तव में बच्चों के सपनों को साकार करने का उचित मंच बन चुका है। विद्यालय में जेईईमेन व एडवांस में हर्षी, छवि, सुजल, सिद्धार्थ, इशान, प्रणव, अनुज, कार्तिक, विवान राव, हार्दिक, अभिनव, दिव्यम, दीपांशु, योगेश, अंकित गौतम, मोहित यादव, रेनित, गौरव, हरमीत, रीतु, अंजु, भव्या, स्वेत, तन्नु, प्रियांशु, रवीना, मुस्कान, भावेश, दक्ष, आदित्य, सुमित, अंशुल, खुशी, समर्थ, आरव सांगवान, नीट में दीपांशु, रीनित, दीपेश, कनिष्का, गौरव, हिंदवी, रीतु, हर्षित यादव, सूर्यपाल, साक्षी, जतिन, भाविका, कुनाल भारद्वाज, मुस्कान, आयुष, रिद्धी, योगेश, चंचल यादव, तान्या, ईशा, चाहत, सानिया, तमन्ना, अमन, नंदनी, खुशी, निशा, कुनाल, पीयूष, आशीष गोयल, अंतर्राष्ट्रीय ओलंपियाड ऑफ साइंस सिल्वर जोन में गोल्ड मेडल पाने वाले विद्यार्थी ऋषिका, दक्ष यादव, दीक्षांत, रुद्र प्रताप, वंशिका यादव, भारतीय सांख्यिकी इंस्टीट्यूट कोलकाता की 55 सीटों में दूसरा और तीसरा रैंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थी ईशान और अंशुल के अलावा कक्षा 12वीं नॉन मेडिकल से हर्षी, मानसी, अमन, मेडिकल से दीपांशु, रॉनित यादव, निशा, कॉमर्स से पवन, मनु देव, हंसिका अग्रवाल, कला संकाय से जयवर्धन सिंह, अंशिका, जानवी, समीर यादव को स्मृति चिह्न व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। विद्यालय में अपने अभिभावकों के साथ पहुंचे प्रतिभाशाली बच्चों का विद्यालय के प्रवेश द्वार पर भव्य स्वागत किया गया। आरपीएस ग्रुप चेयरपर्सन डॉ. पवित्रा राव, इंजी. मनीष राव व डिप्टी सीईओ कुनाल राव ने कहा कि आज के बच्चे ही कल देश का भविष्य होंगे।

खबर संक्षेप

यदुवंशी कॉलेज में मंगल पांडे की जयंती मनाई

नारनौल। यदुवंशी डिग्री कॉलेज प्रांगण में संस्था निदेशक सुरेश यादव, डॉ. प्रदीप यादव, प्राचार्य बजरंगलाल, उपप्राचार्या सोनल यादव की ओर से भारतीय स्वाधीनता संग्राम के अग्रणी योद्धा एवं 1857 की क्रांति के नायक मंगल पांडे की प्रतिमा पर पुष्प अर्पित कर जयंती धूमधाम से मनाई गई। प्राचार्य ने विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए कहा कि प्रसिद्ध भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों में से एक मंगल पांडे को भारतीय विद्रोह का अग्रदूत माना जाता है। यदुवंशी एजुकेशन ग्रुप के चेयरमैन व पूर्व विधायक राव बहादुर सिंह ने कहा कि मंगल पांडे साहस और बलिदान के प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं।

हिसार में पुलिस कार्रवाई लोकतंत्र के लिए खतरा

महेंद्रगढ़। नारनौल। बहुजन समाज पार्टी के नेता प्रमुख समाजसेवी अतरलाल एडवोकेट ने हिसार में अनुसूचित जाति के युवा गणेश वाल्मीकि की पुलिस द्वारा पीट पीट कर की गई निर्मम हत्या की निंदा की है। उन्होंने पुलिस की इस बर्बर जघन्य कार्रवाई को लोकतंत्र के लिए खतरा बताते हुए राज्य सरकार से दोषी पुलिसकर्मियों के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज करने की मांग की है। अतरलाल ने मुख्यमंत्री सैनी को भेजे ज्ञापन में कहा है कि हिसार में वाल्मीकि समाज के 16 वर्षीय गणेश नामक युवा की पुलिस द्वारा बेरहमी से पीट पीट कर हत्या करने तथा परिवार की महिलाओं की पिटाई करने के कारण बहुजन समाज के लोगों में रोष व्याप्त है।

राजकीय विद्यालय जैलाफ में जांच शिविर आयोजित

नारनौल। राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय जैलाफ में प्राचार्य लोकेश कुमार की अध्यक्षता व एनएसएस कार्यक्रम अधिकारी धर्मसिंह के नेतृत्व में स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन एएमओ डॉ. जिलेसिंह की देखरेख में आरबीएस के टीम की ओर से किया गया। सभी स्वयंसेवकों व छात्र छात्राओं के स्वास्थ्य की जांच की गई। जिसमें रक्तदाब, बोलने, सुनने व देखने की क्षमता की जांच, हीमोग्लोबिन, एनीमिया, विटामिन की कमी, सामान्य बीमारियों, त्वचा व दातों की जांच की गई। डॉ. जिलेसिंह ने बताया कि बच्चों में हीमोग्लोबिन की कमी एक चिंता का विषय है।

तिगरा, बजाड़, बिहाली व मोहलड़ा में उपस्वास्थ्य केंद्र के लिए नए भवन बनेंगे: स्वास्थ्य मंत्री

सरकार का चिकित्सकों की भर्ती पर विशेष फोकस: आरती सिंह राव

नारनौल। आमजन की शिकायतें सुनती स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव।

■ कांटी पीएचसी के भवन के लिए प्रकिया तेज

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

प्रदेश की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने अटेली विधानसभा क्षेत्र के खेड़ी व नावदी गांवों के दौरा कार्यक्रम के दौरान कहा कि मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के कुशल नेतृत्व में हरियाणा सरकार प्रदेश में चिकित्सकों की कमी को जल्द पूरा करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि सरकार चिकित्सकों की भर्ती पर विशेष ध्यान केंद्रित कर रही है और इस दिशा में योजनाबद्ध तरीके से लगातार भर्ती प्रक्रिया जारी है।

स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि प्रदेश के प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण स्वास्थ्य सेवाएं उपलब्ध कराना सरकार की सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए स्वास्थ्य विभाग लगातार चिकित्सकों की नई भर्तियां कर रहा है, ताकि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ किया जा सके। उन्होंने कहा कि सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि भर्ती प्रक्रिया पारदर्शी और जल्द हो, ताकि योग्य चिकित्सक जल्द से जल्द अपनी सेवाएं देना शुरू कर सकें। उन्होंने ग्राम पंचायत कांटी के भवन में चल रही पीएचसी के संबंध में जानकारी देते हुए बताया कि इसकी मंजूरी आ चुकी है। अब यह जमीन स्वास्थ्य विभाग के नाम हो चुकी है। अगले सप्ताह में निशानदेही करवाकर चीफ आर्किटेक्ट के पास फाइल जाएगी। वे खुद लगातार इस मामले को नजदीक से देख रही हैं। इसके अलावा स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि 15वें वित्त आयोग की सिफारिशों के तहत अटेली खंड के तिगरा, बजाड़, बिहाली और मोहलड़ा गांवों में उप स्वास्थ्य केंद्र के लिए नए भवन बनाए जाएंगे। ये उप स्वास्थ्य केंद्र ग्रामीण क्षेत्रों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर करेंगे। इन गांवों के लोगों को अपने घर के करीब ही बुनियादी स्वास्थ्य जांच, टीकाकरण, गर्भावस्था से संबंधित देखभाल और सामान्य बीमारियों के लिए इलाज जैसी सुविधाएं मिलेंगी। उन्हें दूर के बड़े अस्पतालों या प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों तक जाने की जरूरत कम पड़ेगी।

ग्रामीणों की समस्याएं सुनीं

इस अवसर पर स्वास्थ्य मंत्री ने स्थानीय ग्रामीणों से भी बातचीत की और उनकी समस्याओं को सुना। उन्होंने खेड़ी गांव की पंचायत को विकास कार्यों के लिए 10 लाख रुपये की धन राशि की घोषणा की। वहीं खेड़ी गांव में एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत स्वास्थ्य मंत्री ने पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया। इन कार्यक्रमों के बाद उन्होंने अपने अटेली स्थित कार्यालय में भी नागरिकों की समस्याएं सुनी। इस मौके पर कोसली के विधायक डॉ. अनिल यादव, एसडीएम नारनौल रमित यादव, सीएमओ डॉ. अशोक कुमार, भाजपा जिलाध्यक्ष यतेन्द्र राव, पूर्व विधायक सीताराम यादव, चेयरमैन अटेली नगर पालिका संजय गोयल, चेयरमैन अटेली पंचायत समिति राजेंद्र प्रसाद, चेयरमैन कनीना पंचायत समिति जयप्रकाश, सरपंच खेड़ी सतनारायण, सरपंच नावदी मधुबाला, एडवोकेट हेमंत शर्मा सिहमा सहित अन्य गणमान्य अधिकारी व जनप्रतिनिधि उपस्थित रहे।

सुरक्षा व एसओपी जारी करने को लेकर जताया रोष

जॉब सिक्योरिटी के लिए एचकेआरएन कर्मचारियों ने किया जोरदार प्रदर्शन

प्रदर्शन की अध्यक्षता संघ के प्रदेशाध्यक्ष भूपेश पालीवाल ने की।

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। नागरिक अस्पताल के बाहर विरोध प्रदर्शन करते एचकेआरएन के कर्मचारी। व नागरिक अस्पताल में सरकार के प्रति रोष जताते कर्मचारी। फोटो : हरिभूमि

अनुबंध स्वास्थ्य कर्मचारी संघ (2107) संबंधित भारतीय मजदूर संघ की ओर से एकेआरएन कर्मचारियों की मांगों को लेकर दोपहर को नागरिक अस्पताल में विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रदर्शन की अध्यक्षता संघ के प्रदेशाध्यक्ष भूपेश पालीवाल ने की। इस मौके पर सैकड़ों कर्मचारियों ने अस्पताल गेट पर आकर सरकार के खिलाफ नारेबाजी की और मांगों को पूरा करने की मांग की।

प्रदेशाध्यक्ष भूपेश पालीवाल ने कहा कि सरकार ने एचकेआरएन कर्मचारियों को चुनाव से पहले मुख्यमंत्री ने पहली कलम से जॉब सिक्योरिटी देने वादा किया था, लेकिन अब सरकार एक साल पूरा करने की तरफ बढ़ रही है, लेकिन इतने दिनों बाद भी इस घोषणा को लागू नहीं किया गया है। इसको लेकर कर्मचारियों में बड़ा भारी रोष बना हुआ है। कर्मचारियों ने बताया कि उनकी सबसे बड़ी समस्या जॉब सिक्योरिटी एक्ट 2024 का अभी तक लागू नहीं होना है। कर्मचारियों ने बताया कि वह इस मुद्दे को लेकर काफी समय से आवाज उठा रहे हैं, लेकिन अभी तक प्रदेश सरकार ने उनकी एक भी सुनवाई नहीं की है। सरकार एसओपी का लाभ भी नहीं दे रही और न ही सेलरी में आठ प्रतिशत की बढ़ोतरी की गई है, जिस कारण बड़े आंदोलन करने के लिए तैयार हैं, जिसकी जिम्मेदार स्वयं राज्य सरकार की होगी। पूरे महेंद्रगढ़ जिले के कर्मचारियों ने अपना रोष प्रदर्शन किया।

यह रहे मौजूद

इस प्रदर्शन में कर्मवीर, विक्रम नारनौल प्रधान, सुनील शर्मा, महेंद्रगढ़ से अशोक, अनिकेश, सतनाली से छाजूराम, नीरज, नांगल चौधरी से सुरेंद्र कुमार, जिला मीडिया प्रभारी नितेश शर्मा, शीशराम रावत, अटेली से अजय प्रधान, हेमंत, कनीना से पवन कुमार व सुधीर कुमार अनेक कर्मचारी उपस्थित थे।

सरकार पर अनदेखी का लगाया आरोप

महेंद्रगढ़। अनुबंध स्वास्थ्य कर्मचारी संघ हरियाणा संबंधित भारतीय मजदूर संघ व प्रदेश अध्यक्ष भूपेश पालीवाल के मार्गदर्शन में नागरिक अस्पताल में बैठक का आयोजन किया। बैठक में एचकेआरएन के कर्मचारियों में सरकार के प्रति भारी रोष देखने को मिला। इस दौरान एचकेआरएन कर्मचारियों ने सरकार के प्रति रोष प्रदर्शन किया। स्वास्थ्य विभाग के एचकेआरएन कर्मचारियों ने बताया कि उनकी सबसे बड़ी समस्या जॉब सिक्योरिटी एक्ट-2024 हैं, जिसे सरकार ने अभी तक लागू नही किया हैं। वह इस मुद्दे को लेकर काफी समय से आवाज उठा रहे हैं, परंतु अभी तक सरकार की तरफ से कोई प्रतिक्रिया नहीं आई हैं। उन्होंने बताया कि सभी कर्मचारियों ने यह निर्णय लिया है अगर उनको जल्द से जल्द जॉब सिक्योरिटी व एसओपी जारी नहीं की तो वह बड़े आंदोलन करने को मजबूर होंगे, जिसकी जिम्मेदारी स्वयं हरियाणा सरकार की होगी। इसी कड़ी में महेंद्रगढ़ सिविल अस्पताल में एचकेआरएन कर्मचारियों ने रोष प्रदर्शन किया हैं। उन्होंने कहा कि जॉब सिक्योरिटी एक्ट एक अहम मुद्दा है, उसके प्रति सरकार के खिलाफ आंदोलन किया जाएगा या तो सरकार एसओपी जल्द जारी करे, नहीं तो अनुबंधित स्वास्थ्य कर्मचारी संघ संबंधित भारतीय मजदूर संघ के मार्गदर्शन पर एक बड़ा आंदोलन करने के लिए कर्मचारी पूरी तरह तैयार हैं। उन्होंने कहा कि सरकार को समय रहते कर्मचारियों की मांग पूरी करनी चाहिए।

नारनौल। नाके पर तैनात पुलिसकर्मी।

कांवड़ यात्रा को लेकर सुरक्षा के कड़े प्रबंध

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

■ सोशल मीडिया पर आमजन किसी भी पोस्ट को वेरीफाई के बिना फारवर्ड न करें

पुलिस ने कांवड़ यात्रा के दौरान श्रद्धालुओं की सुविधा व सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम किए हैं। सभी पर्यवेक्षण अधिकारियों व थाना प्रबंधकों को अलर्ट रहने के लिए कहा गया है, ताकि यात्रा के दौरान किसी प्रकार की अप्रिय घटना ना हो और कानून व्यवस्था सुचारू रहे। श्रद्धालुओं के रात्रि ठहराव के लिए रूटों पर सामाजिक संगठनों की ओर से लगा किए गए शिविरों की निगरानी की जा रही है।

जिन मार्गों से श्रद्धालुओं की ओर से कांवड़ लाई जाती है, उन सभी मार्गो पर श्रद्धालुओं की सुविधा व कानून व्यवस्था को लेकर पुलिस बल की तैनाती की गई है। इसके साथ ही अगर किसी शिवभक्त की कांवड़ किसी कारणवश खंडित हो जाती है, तो उस स्थिति में पुलिस प्रशासन की ओर से गंगाजल की व्यवस्था भी की गई है।

पुलिस अधीक्षक पूजा वशिष्ठ के निर्देशानुसार जिलेभर में पुलिस की ओर से मुख्य मार्गों पर नाके लगाए गए हैं। पुलिस की ओर से सुरक्षा व कानून व्यवस्था के पुख्ता प्रबंध किए गए हैं। असामाजिक तत्वों की गतिविधियों पर पुलिस की लगातार कड़ी निगरानी जारी है। किसी भी व्यक्ति की किसी भी प्रकार के साम्प्रदायिक माहौल को खराब करने की संलिप्तता पाई जाती है, तो उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

सोशल मीडिया पर आमजन किसी भी पोस्ट को वेरीफाई के बिना फारवर्ड न करें। पुलिस की ओर से कांवड़ियों व आमजन से अपील की गई है कि वे पुलिस तथा प्रशासन द्वारा जारी किए गए निर्देशों की पालना करें, ताकि कांवड़ यात्रा सुरक्षित व सुव्यवस्थित तरीके से संपन्न हो सके।

स्वास्थ्य मंत्री ने 57 लाख रुपये के विकास कार्यों का किया शिलान्यास

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

आमजन की समस्याओं का त्वरित समाधान कर उन्हें सरकार की योजनाओं का लाभ देना ही सरकार की पहली प्राथमिकता है। यह बात हरियाणा की स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने शनिवार को अटेली कार्यालय में आमजन की समस्याएं सुनते हुए कही। स्वास्थ्य मंत्री ने कहा कि हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी के नेतृत्व में चल रही सरकार बिना किसी भेदभाव के राज्य में सम्मान विकास कर रही है। उन्होंने लोगों से कहा कि आप कभी भी अपनी शिकायतों के समाधान के लिए मुझसे मिल सकते हैं। इस मौके पर उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि आमजन की जो भी जायज शिकायतें हैं उनका समय पर समाधान करें। स्वास्थ्य मंत्री आरती सिंह राव ने अपने निजी कोष से कई विकास कार्यों का शिलान्यास भी किया। इसमें ग्राम पंचायत सेहलंग में 15 लाख रुपये की लागत से इंडोर जिम के निर्माण कार्य का शिलान्यास, ग्राम पंचायत भुंगारका में 12 लाख रुपये की लागत से भाडोदा जोहड़ के नवीनीकरण व सौंदर्यीकरण कार्य का शिलान्यास, ग्राम पंचायत मोरूंड में 12 लाख से इंडोर जिम के निर्माण कार्य का शिलान्यास, ग्राम पंचायत रसुलपुर में तीन लाख से भवन नवीनीकरण कार्य का शिलान्यास, ग्राम पंचायत मोहलड़ा में 15 लाख से खेल मैदान के विकास कार्य का शिलान्यास शामिल है।

खेल न केवल शारीरिक, बल्कि मानसिक रूप से भी बनाते हैं मजबूत : विधायक

हरिभूमि न्यूज ▶▶| नारनौल

नारनौल। प्रतियोगिता में भाग लेने वाली छात्राओं से बातचीत करते विधायक कंवर।

पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय करीरा में 17 से 19 जुलाई तक चल रही तीन दिवसीय संभाग स्तरीय कबड्डी प्रतियोगिता का शनिवार को समापन हुआ। प्रतियोगिता के समापन अवसर पर महेंद्रगढ़ विधायक कंवर सिंह यादव ने मुख्य अतिथि के तौर पर शिरकत की। मुख्य अतिथि ने संबोधित करते हुए कहा कि खेल न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी विद्यार्थियों को मजबूत बनाते हैं।

उन्होंने छात्राओं को आगे भी खेलों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया और खेल सुविधाओं के विस्तार के लिए हर संभव सहायता देने का आश्वासन दिया। विधायक कंवर सिंह यादव ने विजेता व उपविजेता खिलाड़ियों को पदक, प्रमाण पत्र एवं ट्रॉफियां देकर सम्मानित किया। विद्यालय के प्राचार्य धर्मेंद्र आर्य ने विधायक व अन्य गणमान्य अतिथियों का आभार व्यक्त किया और आयोजन को सफल बनाने वाले सभी शिक्षकों, अन्य विद्यालयों से आए शिक्षकों, विद्यार्थियों और स्टाफ सदस्यों की सराहना की और उन्हें सम्मान स्वरूप स्मृति चिह्न भेंट किया।

इस अवसर पर विद्यालय की छात्राओं ने स्वागत गीत व पारम्परिक नृत्य प्रस्तुत किया। विद्यालय की शारीरिक शिक्षिका उषा रानी, शारीरिक शिक्षक योगेश शर्मा, वरिष्ठ शिक्षक विजय मोहन, विक्रम सिंह, संगीता, सुदेश, सुमन, सरला यादव, कुमारी निधि ने कार्यक्रम के सफल आयोजन में अहम भूमिका अदा की।

महेंद्रगढ़। प्रतियोगिता के विजेताओं को सम्मानित करते विधायक।

खेल जीवन का महत्वपूर्ण अंग : विधायक

महेंद्रगढ़। गांव करीरा स्थित पीएमश्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय में आयोजित तीन दिवसीय क्षेत्रीय कबड्डी मीट का शनिवार को सम्मान हो गया। समापन समारोह में मुख्यातिथि विधायक कंवर सिंह यादव मौजूद रहे। समारोह का शुभारंभ विद्यालय प्राचार्य धर्मेंद्र आर्य ने मुख्य अतिथि का स्वागत पुष्पगुच्छ भेंट कर किया गया। छात्राओं ने स्वागत गीत एवं परम्परिक नृत्य प्रस्तुत किया गया। प्रतियोगिता में करनाल कलस्टर क्षेत्रीय कबड्डी प्रतियोगिता का ओवर आल विजेता रहा। विधायक कंवर सिंह यादव ने कहा कि खेल न केवल शारीरिक रूप से बल्कि मानसिक रूप से भी विद्यार्थियों को मजबूत बनाते हैं। खेल तनाव से मुक्ति का एक स्वस्थ माध्यम प्रदान करते हैं। इस अवसर पर विद्यालय की शारीरिक शिक्षिका ऊषा रानी, शारीरिक शिक्षक योगेश शर्मा, वरिष्ठ शिक्षक विजय मोहन, विक्रम सिंह, संगीता, सुदेश, सुमन, सरला यादव एवं कुमारी निधि आदि मौजूद थे।

युवा रचनाकार ओशिन शुक्ला को मिला शब्दों के जादूगर सम्मान

नारनौल। राष्ट्रीय साहित्यिक संस्था काव्य रसिक संस्थान की कर्नाटक इकाई की ओर से प्रगतिशील शिक्षक ट्रस्ट की साहित्यिक इकाई के अध्यक्ष एवं युवा रचनाकार ओशिन शुक्ला को शब्दों के जादूगर सम्मान से अलंकृत किया गया। इस विषय में जानकारी देते हुए ट्रस्ट के अध्यक्ष डॉ. संजय शर्मा ने बताया कि काव्य रसिक संस्थान की ओर से 17 जुलाई को कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें देशभर के साहित्यकारों की सहभागिता रही। कवि सम्मेलन में शानदार काव्य प्रस्तुति व उत्कृष्ट साहित्यिक गतिविधियों के लिए ओशिन शुक्ला को यह सम्मान दिया गया। युवा रचनाकार के पिता पवन शुक्ला ने बताया कि ओशिन की साहित्य में गहन रूचि है। वह अक्सर साहित्यिक गतिविधियों में ही लीन रहता है।

यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ेगी, अन्य साधनों से करना होगा सफर

इंटरलॉकिंग के चलते 12 ट्रेनें एक सप्ताह के लिए रद्द

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। रेलवे स्टेशन महेंद्रगढ़।

उत्तर रेलवे के दिल्ली मंडल के सराय रोहिल्ला स्टेशन पर चलने वाले इंटर लॉकिंग कार्य के चलते रेवाड़ी लौहारु मार्ग पर एक सप्ताह के लिए 12 गाड़ियां रद्द रहेंगी, जिस कारण यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ सकती है।

इसके अलावा चार गाड़िया मार्ग परिवर्तन कर दिया गया है तथा गाड़ी संख्या 22472 दिल्ली से बीकानेर चलने वाली गाड़ी 21 से 28 जुलाई तक सराह रोहिल्ला की बजाय दिल्ली कैंट से सुबह 8.55 बजे रवाना होगी। दैनिक रेलयात्री महासंघ के अध्यक्ष रामनिवास पाटोदा ने बताया कि इस मार्ग पर गाड़ियों की संख्या बहुत कम है। अब एक सप्ताह के लिए गाड़ियों को बंद कर दिया गया है। उनका कहना है कि दिल्ली सराह रोहिल्ला स्टेशन पर इंटर लॉकिंग का कार्य चलेगा। इसलिए रेलवे की ओर से रेवाड़ी तक गाड़ियों को चलाया जा सकता है। गाड़ियों का संचालन बंद होने के बाद इस मार्ग के यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ेगी। उन्होंने बताया कि यह त्योहारी सीजन है।

ये ट्रेन	रद्द रहेंगी	रद्द रहने का समय
12458	बीकानेर से दिल्ली	20 से 27 जुलाई तक
22421	दिल्ली से बीकानेर	21 से 28 जुलाई तक
22422	जोधपुर से दिल्ली	21 से 29 जुलाई तक
12457	दिल्ली से बीकानेर	21 से 29 जुलाई तक
14713	सीकर से दिल्ली	25 जुलाई
14714	दिल्ली से सीकर	25 जुलाई
22481	जोधपुर से दिल्ली	20 से 27 जुलाई तक
22482	दिल्ली से जोधपुर	21 से 28 जुलाई तक
54316	हिसार से रेवाड़ी	24 से 28 जुलाई तक
54315	रेवाड़ी से हिसार	24 से 28 जुलाई तक
54309	दिल्ली से हिसार	24 से 28 जुलाई तक
54310	हिसार से दिल्ली	24 से 29 जुलाई तक

इस वजह से लोग राजस्थान, हरियाणा व दिल्ली की ओर प्रतिदिन भारी संख्या में आवागमन करते है। वहीं हरियाणा में 26 व 27 जुलाई को होने वाली सीईटी की परीक्षा के चलते रोडवेज बसों का अभाव रहेगा। ऐसे में यात्रियों को भारी परेशानी उठानी पड़ सकती है।

इनका मार्ग परिवर्तन

इंटर लॉकिंग के कार्य के चलते चार गाड़ियों के मार्ग पर परिवर्तन कर दिया गया है। गाड़ी संख्या 12259 हावडा से चलकर बीकानेर जाने वाली सुपरफास्ट गाड़ी 23 से 27 जुलाई तक मार्ग परिवर्तन कर दिया गया है। गाड़ी संख्या 12323 हावड़ा से चलकर बाडमेर सुपरफास्ट गाड़ी का 22 से 25 जुलाई तक, गाड़ी संख्या 12372 बीकानेर से हावड़ा चलने वाली सुपरफास्ट 24 जुलाई को तथा गाड़ी संख्या 15624 कामख्या से चलकर भगत की कोठी को जाने वाली गाड़ी का 25 जुलाई को मार्ग परिवर्तन रहेगा।

यूनिवर्सिटी गेट्स पर डॉग स्क्वायड के साथ नशे का सघन चेकिंग अभियान चला

हरिभूमि न्यूज ▶▶| महेंद्रगढ़

महेंद्रगढ़। दुकानों की चेकिंग करते पुलिसकर्मी।

पुलिस ने नशे के खिलाफ एक बड़ा अभियान छेड़ा हुआ है, जिसके तहत हाल ही में यूनिवर्सिटी के गेट नंबर-एक और दो के सामने स्थित दुकानों पर डॉग स्क्वायड टीम के साथ सघन चेकिंग की गई। इस विशेष अभियान का मुख्य उद्देश्य नशा करने वालों और नशा बेचने वालों पर शिकंजा कसना था, ताकि जिले को नशा मुक्त बनाया जा सके। पुलिस बल की विभिन्न टीमों ने मौके पर मौजूद रहकर नशीले पदार्थों और अन्य संदिग्ध वस्तुओं की गहनता से जांच-पड़ताल की। डॉग स्क्वायड की सहायता से, टीमों ने उन जगहों पर भी तलाशी ली, जहां नशीले पदार्थ छुपाए जाने की आशंका थी। यह चेकिंग अभियान न केवल अवैध नशीले पदार्थों की रोकथाम पर केंद्रित था, बल्कि सुरक्षा की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण था, ताकि किसी भी संदिग्ध गतिविधि पर तुरंत नजर रखी जा सके। चेकिंग अभियान में थाना सदर, सीआईए महेंद्रगढ़, डॉग स्क्वायड टीम और आकोदा चौकी की टीम शामिल रही। पुलिस ने आम जनता से भी सहयोग की अपील की है। उन्होंने नागरिकों से आग्रह किया है कि यदि उन्हें जिले में कहीं भी कोई नशीला पदार्थ बेचता हुआ दिखाई देता है, तो उसकी सूचना तुरंत डायल-112 पर या अपने नजदीकी पुलिस थाना-चौकी में दें।

हरिभूमि रविवार भारती
haribhoomi.com
छत्तीसगढ़, दिल्ली, हरियाणा और मध्यप्रदेश से एक साथ प्रकाशित
P-1
रोहतक,रविवार 20 जुलाई 2025

कवर स्टोरी
शिखर चंद जैन

कभी-कभी बन जाएं बच्चे
जी भर करें लाइफ एंज्वॉय

जीवन में सबसे सुहाने दिन बचपन के ही होते हैं। उस दौर से जुड़ी यादें हम कभी नहीं भूल पाते हैं। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम बड़े हो गए तो अब बच्चों जैसी हरकतें नहीं कर सकते। जब भी मौका मिले, कुछ पल के लिए ही सही फिर से बच्चा बनकर देखिए, आपका तनाव गायब हो जाएगा और लाइफ को भरपूर एंज्वॉय कर पाएंगे।

अपनी जिंदगी में रोजमर्रा की जिम्मेदारियों के बोझ से व्यथित होकर अकसर हम अपने बचपन के दिनों की मस्ती, बेपरवाही और उन दिनों से जुड़ी कुछ खास बातों को याद करके उदास हो जाते हैं और अनायास ही बोल पड़ते हैं, *बचपन के दिन भी क्या दिन थे, उड़ते फिरते थे तितली बन।* कई बार मन में ऐसा भी खयाल आता है कि सब के सपनों को साकार करने में, दुनिया की उम्मीदों पर खरा उतरने की कोशिश में, कितना थक जाते हैं हम। हम सोचने लगते हैं कि काश, फिर से वो बेफिक्री आ जाए, जो बचपन के दिनों में हुआ करती थी। वाल्ट डिजनी ने कहा था, 'इस दुनिया की मुश्किल यह है कि बहुत सारे लोग बड़े हो गए हैं।'

नहीं भूलते वो मस्ती भरे दिन

इस दुनिया में शायद ही कोई शख्स होगा, जो अपने बचपन के दिनों में लौट जाने की ख्वाहिश ना रखता हो, जब जिम्मेदारियां कम थीं और खुशियां बेशुमार। होमवर्क को झटपट पूरा किया और घर से बाहर निकल गए कॉलोनी के पार्क में, मकान की छत पर या अपनी बालकनी में। कभी मिट्टी में लथपथ हुए, तो कभी बारिश के पानी में भीगे। बाजार से गेंद नहीं ला पाए तो रद्दी कागजों का गोला बनाकर खेलने लगे। महंगे खिलौने ना हों तो कागज की नाव या पतंग ही सही। बस मस्ती चाहिए थी, हर कीमत पर।

करें ऐसा, जिसमें आए मजा

आप चाहें तो आज अपने बचपन वाली उम्र भले वापस ना ला सकें, लेकिन 40, 50, 60 साल के होने के बावजूद दिल बचपन का ला सकते हैं। इससे न सिर्फ आपको अनूठी खुशी मिलेगी बल्कि स्ट्रेस लेवल भी कम होगा। याद कीजिए बचपन में हम कितने क्रिएटिव होते थे। हमारे पास हर चीज का विकल्प था। माचिस की बेकार डिब्बियों से टीवी जैसी आकृति बना लेते थे। अखबारों या पत्रिकाओं से कटी तस्वीरों को एक के बाद एक चिपका कर लंबा करना फिर उनके दोनों सिरे पर 2 तिनकों में लपेटना। फिर डिब्बी बीच से काटकर स्क्रीन बनाकर तिनके घुमाते हुए अलग-अलग तस्वीरें

देखना। एक रुपए के लट्टू या 2 रुपए की गेंद से दिनभर खेलना, मस्ती करना। कागज की नाव बनाकर उसे बरसात के पानी में चलाना। चित्रकारी, डांस, कॉमिक्स पढ़ना, किसी गीत की पैरोडी बनाकर उसे गुनगुनाना हमें कितना प्रफुल्लित करता था। अब भी क्या बिगड़ा है! अब भी आप ऐसी क्रिएटिव एक्टिविटी अपनाएं, जो आपको खुशी दे। कुकिंग, डांसिंग, सिंगिंग, ड्राइंग कुछ भी कीजिए ताकि कुछ देर अपनी जिम्मेदारियों को भूल कर उसमें व्यस्त हो जाएं।

याद करिए गुजरे हुए दिन

किसी ने कहा है, *टूटे बर्तन को खिलौना बना लेते हैं, हम बच्चे हैं हर जगह आशियाना बना लेते हैं।* अगर इसी सिद्धांत पर आज भी चलें तो आप खूब खुश रहेंगे। अगर आप संयोगवश अभी उसी शहर में रहते हैं, जहां आपका जन्म हुआ और बचपन बीता तो कभी उस गली या मोहल्ले में जाइए, जहां आपने बचपन बिताया और उन दिनों को शिद्दत से याद कीजिए। उस मकान के अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले लोगों से मिलिए, जहां आप रहते थे। उनसे खूब गपशप कीजिए। अगर आपका शहर बदल गया है तो आप गूगल की मदद से उस मोहल्ले, पार्क या स्कूल को देख सकते हैं, जहां आपने बचपन बिताया था, या फिर फेसबुक के माध्यम से अपने बचपन के दोस्तों को ढूंढ़ कर उनसे बातचीत कर सकते हैं। आपके पास बचपन की तस्वीरों का एल्बम हो तो उन तस्वीरों को देखिए और एक-एक तस्वीर से जुड़ी बातें याद कीजिए। वही वाली टॉफी खरीदकर फिर से खाइए, जो आपको खूब पसंद हुआ करती थी। उस मिठाई की दुकान पर जाकर समोसा या कचौरी खाइए, जहां के समोसे, कचौरी आप बचपने में बड़े चाव से खाते थे। आप कुछ देर के लिए ही सही अपने बचपन में पहुंच जाएंगे। यकीन मानिए, किसी की लिखी ये पंक्तियां आपको बरबस याद आ जाएंगी कि *नंगे पांव दौड़ते थे उस बचपन में। बढ़ते तजुर्बे ने पैरों में चुभन का एहसास करा दिया।*

खूब लें राइडिंग का मजा

अपने बचपन को लौटाने के लिए, उन पलों को फिर से जीने के लिए आज के जमाने में बेस्ट प्लेस हैं एम्यूजमेंट पार्क। एम्यूजमेंट पार्क में छोटे बच्चों को खेलते देखकर आपको अपना बचपन याद आ जाएगा। फिर तरह-तरह के राइड्स का आनंद लेना, वहां घूमना-फिरना और मस्ती करना आपके अंतर्मन को पूरी तरह खुश कर देगा। जब मौका मिले, आप ऐसी जगहों पर जरूर जाएं और राइड्स के साथ-साथ वहां मिलने वाले डिफरेंट फूड्स एंज्वॉय करना ना भूलें।

बचकानी हरकतों से ना झिझकें

किसी ने क्या खूब लिखा है, *झूठ बोलते थे फिर भी कितने सच्चे थे हम। यह उन दिनों की बात है जब बच्चे थे हम।* आपने देखा होगा कि बच्चों को जो पसंद आता है, वे उसे पूरी मस्ती के साथ करते हैं। चाहे खेलना-कूदना हो, गाना हो या नाचना हो। उन्हें इस बात की बिल्कुल परवाह नहीं रहती कि कोई क्या सोचेगा या क्या कहेगा? उनका पूरा ध्यान सिर्फ अपनी खुशी और मस्ती में होता है। आपको भी बिल्कुल वही बेपरवाही अपनानी होगी। अपने हमउम्र दोस्तों के साथ ठहाके मारकर हंसना, चुटकुले सुनाना, डांस करना या जो अच्छा लगता हो करें। यकीन मानिए आप अपनी उम्र काफी कम महसूस करने लगेंगे। इस बारे में मनोचिकित्सक डॉक्टर संजय गर्ग कहते हैं, 'हम वयस्क होकर भी बच्चों जैसी मस्ती कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए बनावटी कंफर्ट जोन से बाहर आकर रियल कंफर्ट जोन में जाने के लिए मेंटली प्रिपेयर होना पड़ेगा।' *

लाइफस्टाइल / अंजू जैन

कुछ लोगों की आदत होती है कि वे हर छोटी-बड़ी बात पर जरूरत से ज्यादा सोच-विचार यानी ओवर थिंकिंग करते हैं। इससे वे कोई भी निर्णय जल्द नहीं ले पाते हैं। अगर आप भी ऐसी समस्या से ग्रस्त हैं तो यहां बताए जा रहे उपायों को आजमा सकते हैं।

क्या आप भी करते रहते हैं
हर बात पर ओवर थिंकिंग

यह सही है कि कोई भी काम अच्छी तरह सोच-विचार कर करना चाहिए। विचारशीलता और मनन करना अच्छी बात है। लेकिन जब आपका चिंतन, मनन या विचार मंथन जरूरत से ज्यादा समय तक या ज्यादा मात्रा में होने लगता है तो यह अनायास ही चिंता और ओवर थिंकिंग की आदत में तब्दील हो जाता है, जो लाइफस्टाइल को प्रभावित कर सकता है। इसलिए इस हैबिट से उबरने के लिए यहां बताई जा रही बातों पर अमल करें।

दूसरों पर ध्यान न लगाएं: हमारा मन अकसर बाहरी कारकों पर ध्यान केंद्रित करने पर उलझा रहता है। जब हम ईर्ष्या, दूसरों द्वारा हमारी आलोचना, दूसरों की सुख-समृद्धि पर ध्यान केंद्रित करते हैं तो हमारा मन अस्थिर और अशांत हो जाता है। इसलिए बेहतर होगा कि हमारी सोच और चिंतन का दायरा उन्हीं चीजों तक सीमित हो, जिन्हें हम सुधार, बदल या नियंत्रित कर सकते हैं। पुस्तक 'हेवनॉट गॉट टाइम फॉर द पेन' में लिखा गया है कि आपको अपने उलझे हुए विचारों को बदलना और उनका समाधान करना सीखना चाहिए। सबसे पहले जानिए कौन से विचार आपको पीड़ा देते हैं? उन विचारों को छोड़ने की कोशिश करें। ज्यादा सोचने से चीजें उलझ जाती हैं। इसलिए जीवन जीने और सोचने की प्रक्रिया को सरल रखें।

धैर्य बनाए रखें: यह एक मूलभूत सिद्धांत है कि आप जो अभी बोएंगे उसकी फसल आप बाद में काट पाएंगे। लेकिन हमारा चंचल स्वभाव इस बात को मानता नहीं और वह तुरंत परिणाम न मिलने पर विचलित हो जाता है। अपनी मेहनत के परिणाम के लिए जरा सा धैर्य रखिए फिर भी वांछित नतीजा ना मिले तो उस पर पुनर्विचार करिए।

भाग्य को न कोसें: मुश्किल परिस्थितियों में मनुष्य भाग्य को दोष देता है। लेकिन उसका भाग्य अधिकांशतः उसके चरित्र, जुनून, गलतियों और कमजोरी का ही प्रतिबिंब होता है। उसे अपने अवसरों से संतुष्ट रहना चाहिए और उनका फायदा उठाने की युक्ति पर विचार करते हुए स्वयं को बेहतर करने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।

परफेक्शन की जिद छोड़ें: कई लोग पूर्णतावाद के शिकार होते हैं। वह किसी काम को करने के बाद भी बार-बार सोचते हैं कि इसे और कैसे बेहतर किया जाए? अगर आपकी भी यह समस्या है तो इससे उबरें। एक काम के बाद अपनी अगली प्राथमिकताओं पर ध्यान केंद्रित करें।

टू द पॉइंट सोचें: आप क्या सोच रहे हैं, क्यों सोच रहे हैं और किन मूल बिंदुओं पर आपका चिंतन है, यह पूरी तरह स्पष्ट होना चाहिए। इसके लिए बिंदुओं को लिख लीजिए। विभिन्न पहलुओं पर गौर कीजिए और फिर सोचिए। ऐसी सोच आपको निर्णय लेने में मददगार होगी और समय भी नष्ट नहीं होगा।

अनुभवी लोगों से मिलें: विचार मंथन की प्रक्रिया अगर लंबी खिंच रही हो और आप किसी निर्णय पर नहीं पहुंच पा रहे हों तो अनुभवी व्यक्तियों से सलाह लें। कुछ परिस्थितियों में सबसे अच्छा यह होता है कि आप अपनी गट फीलिंग का उपयोग करें। आपका अंतर्मन यानी सिक्स्थ सेंस जो कहे उसे ही सही मानें। कई शोध हो चुके हैं, जिनसे पता चलता है कि गट फीलिंग और लॉजिकल सोच का संयोजन सही निर्णय लेने में मददगार होता है।

मन को थकाने से बचें: आपको हर दिन छोटे-बड़े सैकड़ों निर्णय लेने होते हैं, जो आपके मन को थका सकते हैं। ऐसे में बहुत जरूरी है कि अपने दिमाग की शक्ति को बचाने के लिए एक दिनचर्या बनाएं, जिसमें उलझे हुए विषयों पर विचार के लिए एक वक्त तय कर दें। इसी समय जरूरी बातों पर निर्णय लें। बेवजह विचारों के सागर में डूबे रहना समय और ऊर्जा की बर्बादी है। इसकी बजाय सकारात्मक सोच के बीज बोएं और जरूरी चीजों पर विचार करें। पुस्तक 'डेवलपिंग इन टू, हेल्दी थिंकर्स' में कहा गया है कि सकारात्मक वाक्य हमें एक खुशहाल और भयमुक्त जीवन बनाने में प्रभावशाली रूप से मदद करते हैं। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार सूक्तियां चुनें या अपने प्रेरक वाक्यांश बनाएं और उन पर अमल करें।

समय पर छोड़ दें: अगर आप यह सोचकर चिंतित रहते हैं कि पता नहीं कोई समस्या सुलझेगी या नहीं, तो याद करें अतीत में आपने कितनी ही समस्याओं को सुलझाया है। इससे आपकी थिंकिंग पॉजिटिव साइड में चली जाएगी। इसके साथ ही आपको यह भी याद रखना चाहिए कि कई समस्याएं तो समय के साथ सुलझ जाती हैं। ओवर थिंकिंग से बचने का सबसे आसान तरीका पुस्तक 'स्टॉप लुक एंड लिसन' में बताया गया है। इस पुस्तक में विस्तार से समझाया गया है कि आप वर्तमान में जिएं और उस क्षण को पूरी तरह महसूस करें। जिंदगी को एक तय उद्देश्य के साथ आगे बढ़ाएं। कर्म पर विश्वास करें और अपनी मानसिक स्थिति पर नियंत्रण रखें। *

सजेशन
मोनिका शर्मा

स्मार्ट गैजेट्स से दूर रहकर भी
मिल सकती है खुशी-सुकून

हालांकि आज के दौर में स्मार्ट गैजेट्स से पूरी तरह दूर रहना तो संभव नहीं रह गया है। लेकिन अगर केवल इस पर इंटरनेट यूज को कंट्रोल कर लें तो भी खुशी और सुकून हासिल कर सकते हैं।

सब कुछ पा लेने से ही सुकून नहीं मिलता। खुशी का मतलब दुनिया भर से जुड़े रहना ही नहीं होता। टेक्नीक के घेरे में घिरी आज की जिंदगी में स्मार्ट तकनीकों से लैस गैजेट्स से दूरी बनाना भी मन को सुख दे सकता है। वर्चुअल दुनिया में अनजान लोगों तक से जुड़ने और हर पल जुड़े रहने के बजाय, स्क्रीन की मौजूदगी पर लगाम लगाना भी मन को खुशी दे सकता है। टिक-टिक की आवाज पर हमारा ध्यान भटकाते नोटिफिकेशंस को बंद रखना भी मन को शांत सहज रख सकता है। कनाडा और अमेरिका में हुआ एक ताजा अध्ययन नोटिफिकेशंस की टोन पर भागते मन की लगाम थामकर असली दुनिया में सच्चे सुख को जीने की बात पुख्ता करता है।

टिक-टिक पर कंट्रोल के लाभ: बीते कुछ वर्षों में स्मार्टफोन का साथ एक आदत बन गया है। बहुत से लोगों के लिए तो स्क्रीन में झांकते रहना किसी लत से कम नहीं। वहीं इस आदत के खामियाजों को समझकर खुद को वर्चुअल व्यस्तता से बचाने के प्रयास भी खूब किए जा रहे हैं। हालांकि आज के समय में फोन एक जरूरत भी बन गया है। इससे पूरी तरह दूर रहना भी मुश्किल है। पर इसके लती बनने से तो बचा जा सकता है। अमेरिका और कनाडा की कुछ यूनिवर्सिटीज द्वारा एक महीने तक 467 आईफोन यूजर्स पर की गई एक रिसर्च इस मोर्चे पर सही और सहज राह दिखाती है। असल में इस स्टडी में शामिल होने वाले लोगों को फोन का उपयोग पूरी तरह बंद करने की बजाय इंटरनेट का इस्तेमाल न करने को कहा गया था। इन लोगों के फोन में बाकायदा एक एप डाउनलोड की गई थी, जो फोन पर मोबाइल इंटरनेट ब्लॉक करने से जुड़ी थी। अध्ययन में सामने आया कि इंटरनेट बंद रखना लोगों का फोकस बढ़ाने और दिमाग भी जवान करने में मददगार साबित हो सकता है। इतना ही नहीं कुछ दिनों तक अगर फोन में ऐसी सेटिंग रखी जाए तो मूड में भी सुधार हो सकता है। इंसान का दिमाग तो 10 साल तक जवान हो सकता है। स्पष्ट देखने में भी आ रहा है कि पल-पल मिलते नोटिफिकेशंस यूजर्स का ध्यान भटकाने और मेमोरी लॉस का कारण बन रहे हैं। ऐसे में इंटरनेट सेटिंग्स के माध्यम से टिक-टिक पर लगाम लगाने के बहुत लाभ यूजर्स को मिल सकते हैं। आम लोगों के लिए भी खुद को स्मार्ट गैजेट्स से दूर रखने के लिए कुछ समय तक मोबाइल इंटरनेट बंद रखने का यह रास्ता अपनाने योग्य है।

सेटिंग्स का खास असर: फोन की सेटिंग्स चेंज करना कोई बड़ा बदलाव प्रतीत नहीं होता पर इसका असर बहुत अहम है। एक महीने की इस रिसर्च में दो हफ्ते बाद ही लोगों पर मोबाइल इंटरनेट बंद रखने की साधारण सी सेटिंग्स का असाधारण प्रभाव दिखने लगा। अध्ययन में शामिल लोगों ने माना कि वे पहले से ज्यादा खुश हैं। साथ ही अपनी जिंदगी को लेकर उनमें संतुष्टि का भाव भी बढ़ गया है। टिक-टिक या कोई और नोटिफिकेशन टोन को बंद रखने से यूजर्स को ना केवल मानसिक तौर पर स्वस्थ महसूस हुआ बल्कि यह बेहतरी से जुड़े ये बदलाव कॉग्नेटिव बिहेवियरल थेरेपी के बराबर थे। रिसर्च में शामिल लोगों ने बताया कि फोकस्ड रहने को लेकर भी उन्होंने पॉजिटिव बदलाव महसूस किए। साथ ही अटेंशन टेस्ट में इन लोगों के दिमाग ने अपने से 10 साल जवान लोगों के बराबर परफॉर्म किया।

हर फ्रंट पर पॉजिटिव बदलाव: इस स्टडी में सामने आया कि लोगों ने फोन छोड़कर अपने से जुड़े इंसानों के साथ ज्यादा समय बिताया। अच्छे से नींद लेने और एक्सरसाइज करने पर भी ध्यान दिया। लोगों ने हर रात औसतन 17 मिनट अधिक नींद ली। इन नतीजों को देखते हुए रिसर्चर का कहना है कि स्मार्ट फोन से पूरी तरह दूरी नहीं बनाई जा सकती पर इसके इस्तेमाल में बैलेंस रखना बहुत आवश्यक है। यह बहुत व्यावहारिक सा पक्ष है कि हर पल मिलते नोटिफिकेशंस से दूर रहना मानसिक ठहराव देने का काम करता है। यह ठहराव एकाग्रता की सौगात देता है। फोकस्ड रहने वाला इंसान कामकाजी संसार में बेहतर परफॉर्म कर पाता है। *

नवगीत
माणिक विश्वकर्मा 'नवरंग'

कांच के बर्तन

नहीं होते भरोसेमंद
कांच के बर्तन
करने लगते हैं हवा के
सामने नर्तन।
फिजूल दूध को खौलाते रहे
मथ डाले
निकाल लेते हैं मलाई
बेचने वाले
हक में आता है क्रेताओं
के अब खुरचन।
सिर्फ बदली हैं तख्तियां
बदले हैं मुखड़े
नई नहीं है संरचना
बदले हैं टुकड़े
हुआ नहीं है सालों से
कोई परिवर्तन।
काटने की लगी है होड़
अंधभक्तों में
फल और फूल नहीं दिखते
अब दरख्तों में
मांगने के लिए
होता है मिथ्या अर्चन।
स्वयंभू गुरुओं के चेलों
की हैं दुकानें
बखान करते हैं बौद्धिकता
के अफसाने
अपने जैसों के आगे
करते हैं गर्जन।
घरों को लूट रहे हैं
उनके रखवाले
जुबां पे आम आदमी के
पड़े हैं ताले
असत्य बोला नहीं करते
कभी भी दरपन।

व्यंग्य/ अंशुमाली रस्तोगी

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े।

सोना और चोर

सोना जब देखो तब बमचक मचाए ही रहता है। ऐसे में न खरीदने वालों के हाथ आ पाता रहा है, न चोरों के। इससे सबसे अधिक 'आर्थिक नुकसान' हमारे चोर भाइयों का होता है। बेचारे न सोना चुरा पाते हैं, न बेच। महंगे होने के कारण लोगों ने सोना पहनना भी कम कर दिया है। और घर में जो रखा होता है, उसे लॉकर में डलवा देते हैं। अब चोर किस मुंह से किसी के घर चोरी करने जाए। सोना ही एक ऐसा आइटम है, जिसे चुराकर वे अच्छी कमाई कर लेते हैं। अपना घर चला लेते हैं। लेकिन उस पर भी अकसर ही ग्रहण लग जाता है। इसलिए छिनैती की घटनाएं भी अब घट गई हैं। वरना पहले तो चेन-कुंडल खींचने की वारदातें आए दिन अखबारों में पढ़ने को मिल जाया करती थीं। महिलाएं भी बड़ी अजीब हैं। अरे, अपने लिए नहीं तो कम से कम चोरों की भलाई के लिए ही सोना पहन कर घर से बाहर निकला करें। ताकि उन बेचारों की भी दुकान चलती रहे। एक यही तो उनकी कमाई का जरिया है, उस पर भी महंगाई की मार। घोर अन्याय है चोर बिरादरी के साथ। मैं इसकी सख्त शब्दों में मजम्मत करता हूं। सरकार को इस बारे में जरूर कुछ सोच-विचार करना चाहिए।

सोने के संग समस्या यही है कि वो कब बढ़ जाता है, कुछ पता नहीं चलता। रात भर में अपना दांव खेल देता है। लोगों ने भी सोने के प्रति ना जाने क्या मोह पाल रखा है कि रोटी पानी में डुबोकर खा लेंगे, लेकिन सोना जरूर खरीदेंगे। चाहे घर में खुद के रहने के लिए जगह न हो पर सोना जरूर रखेंगे। पहनने को चाहे ढंग के कपड़े न हों पर सोना जरूर पहनेंगे। मतलब हद है। यह नहीं होता कि थोड़ा सोना चोरों को भी दे दें ताकि उनका घर-परिवार भी चलता रहे। किसी गरीब की भलाई करने में दुआएं ही मिलती हैं।

चोरी करना कितना जोखिम भरा काम है, यह तो कोई चोर से ही पूछे। किसी अनजान घर में जाकर चुराई करना, मेरे तो सोचकर ही पसीने छूट जाते हैं। यहां मैं कलम चलाकर ही खुद को ऊंचा लेखक मानता हूं। अजी, कलम का क्या है कोई भी चला सकता है। परंतु चोरी हर कोई नहीं कर सकता। इसके लिए जिगर और इच्छाशक्ति दोनों की भरपूर जरूरत होती है। कभी-कभी तो चोर मुझे, लेखकों से कहीं अधिक सरल और सच्चे जान पड़ते हैं। लेखक चूंकि बुद्धिजीवी होता है, इसलिए हर समय शब्दों-भाषा का जाल बुनता रहता है। चोर सिर्फ चोर होता है। अपने धंधे से मतलब रखता है। यहां-वहां अपनी टांग नहीं फंसाता फिरता। वो तो खामख्वाह मैं लेखक बन गया, जबकि मुझे तो चोर ही बनना चाहिए था।

लोग सोने के महंगा होने पर, अदृश्य डर के कारण, उसे लॉकर में डलवा देते हैं, जबकि मैंने सोना घर में ही रख छोड़ा है। वो इसलिए कल को अगर चोर मेरे घर चोरी करने आता है तो उसे निराश होकर न लौटना पड़े। उसका भी घर-परिवार चलता रहे। वो मुझे दुआएं दे। सोने का क्या है, वो तो पैसे की तरह हाथ का मैल है। आज है, कल नहीं। बल्कि मैं तो कहता हूं, देश के हर नागरिक को चोरों का ख्याल रखना चाहिए। ज्यादा नहीं तो महीने में दो चोरियां तो अपने घर में करवा ही लेनी चाहिए। बड़े-बुजुर्ग भी कह गए हैं, धन बांटने से बढ़ता है।

सही बोल रहा हूं, सोने का चोरी चला जाना पुण्य का काम है। इससे घर में बरकत बनी रहती है। सोने का महंगा होना चोरों के पेट पर लात है।

मुझे आम आदमी की सोने के पीछे दीवानगी कभी समझ नहीं आई। जिसे देखो वो सोना जोड़ने में लगा पड़ा है। कोई शौक के लिए जोड़ रहा है तो कोई शादी के लिए जोड़ रहा है तो कोई आड़े वक्त के लिए जोड़ रहा है। अमां, क्या कीजिएगा इतना सोना जोड़कर। जबकि साथ कुछ नहीं ले जाना है फिर भी...। यही सोना जब चोरी चला जाता है तब रोते हैं। चोरों को बद्दुआएं देते हैं। थाने में रपट लिखवाते हैं। बेवजह पुलिस वालों को भी परेशान करते हैं। मैं तो फिलहाल इस प्रतीक्षा में हूं कि सोना जल्द थोड़ा और नीचे आ जाए और चोरों का कारोबार फिर से चल निकले। मुझे यह कतई अच्छा नहीं लगता कि हम खाएं और चोर बेचारे हमारा मुंह ताकें। उनका दाना-पानी भी चलता रहे तो क्या हर्ज है। *

पुस्तक चर्चा / विज्ञान भूषण

सर्जना और व्याख्या

वरिष्ठ लेखक-पत्रकार अवधेश श्रीवास्तव साहित्य के गंभीर पाठक-विवेचक भी हैं। लंबे समय से वे विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के लिए पुस्तक समीक्षाएं लिखते रहे हैं। हाल में उनकी लिखी समीक्षाओं का संकलन 'सर्जना और व्याख्या' पुस्तकाकार में आया है। इसमें उनके द्वारा लिखी गई तीस पुस्तकों की समीक्षाएं संकलित हैं। अवधेश श्रीवास्तव पुस्तकों का मूल्यांकन पूरी गंभीरता से करते हैं। वे अगर किसी किताब की विशिष्टताओं को रेखांकित करते हैं तो उसकी खामियों पर भी अंगुली रखने से परहेज नहीं करते हैं। यहां विष्णु प्रभाकर, भगवती चरण वर्मा, असगर वजाहत, अलका सरावगी, गोविंद मिश्र, शिवमूर्ति, राम दरश मिश्र, ओम निश्चल आदि की पुस्तकों के अलावा अर्नेस्ट हेमिंग्वे के अनूदित उपन्यास 'शस्त्र विदाई' की समीक्षा भी पढ़ी जा सकती है। *

पुस्तक: सर्जना और व्याख्या (समीक्षात्मक लेख)
लेखक: अवधेश श्रीवास्तव, **मूल्य:** 250 रुपए,
प्रकाशक: शांभवी प्रकाशन, गाजियाबाद

महादेव शिव की दिव्य-भव्य प्रतिमाएं

आस्था / शिखर चंद जैन

महादेव शिव को समर्पित सावन के विशेष महीने में भक्तगण भगवान शिव से जुड़े तीर्थ-स्थलों की यात्रा करते हैं। इस अवसर पर हम आपको अपने देश के विभिन्न स्थानों में स्थित भगवान शिव की कुछ दिव्य और भव्य प्रतिमाओं के बारे में बता रहे हैं। इनके दर्शन मात्र से विलक्षण शांति प्राप्त होती है।

मुरुदेश्वर महादेव कर्नाटक

कर्नाटक के उत्तरी हिस्से के भटकल तहसील में स्थित है मुरुदेश्वर महादेव मंदिर। 'मुरुदेश्वर' भगवान शिव का ही एक नाम है। यहां महादेव की जो मूर्ति स्थापित की गई है, वह देश-दुनिया की दूसरी सबसे बड़ी शिव प्रतिमा है। यह प्रतिमा 123 फीट ऊंची है। इसे बनाने में 2 साल का वक्त लगा। मुरुदेश्वर मंदिर अरब सागर के तट पर स्थित है। यह तीन ओर से अरब सागर से घिरा हुआ है। यह स्थल मंगलौर से 165 किलोमीटर दूर स्थित है। यहां साल भर भक्तों और पर्यटकों का आगमन होता रहता है। *

आदियोगी शिव, कोयंबटूर

भगवान शिव के मुख की दुनिया में सबसे बड़ी प्रतिमा है आदियोगी शिव प्रतिमा। कोयंबटूर से करीब 30 किलोमीटर दूर स्थित यह शिव प्रतिमा 112 फीट ऊंची है। इसका वजन 500 टन है। इसका नाम गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में भी दर्ज किया गया है। इस प्रतिमा को बनाने में सीमेंट, कंक्रीट, बालू आदि किसी भी वस्तु का इस्तेमाल नहीं किया गया है बल्कि इसे धातु के टुकड़ों से बनाया गया है। इसके निर्माण में ढाई साल लगे। इस मंदिर के निर्माण से संबद्ध संस्था ईशा फाउंडेशन के अनुसार आदियोगी शिव का यह चेहरा मुक्ति का प्रतीक है। यह शिव प्रतिमा योग को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाई गई है। *

सर्वेश्वर महादेव, वडोदरा

गुजरात के वडोदरा शहर के मध्य में स्थित है सूरसागर झील और इस झील के बीचों-बीच विराजमान हैं सर्वेश्वर महादेव। 78 फीट गहरे 23 खंभों पर टिकी सर्वेश्वर महादेव की यह मूर्ति 120 फीट ऊंची है। इसके निर्माण में 6 वर्ष लगे थे। यह स्थान अहमदाबाद से 112 किलोमीटर दूर है। शिव भक्तों के लिए यह मंदिर आस्था का केंद्र तो है ही, अन्य धर्मावलंबियों एवं पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र है। इस मंदिर के आस-पास भी बहुत कुछ दर्शनीय है। *

सिद्धेश्वर महादेव, सिक्किम

सिक्किम के सोलोफोक पहाड़ी पर सिद्धेश्वर महादेव यानी भगवान शिव की बैठी हुई मुद्रा में लगभग 87 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। आधार से इसकी ऊंचाई 108 फीट है। सिक्किम के लोग इसे नामची महादेव और भगवान किरतेश्वर के नाम से भी पूजते हैं। सफेद रंग की यह मूर्ति आस्थावान शिव भक्तों के साथ-साथ पर्यटकों को भी आकृष्ट करती है। यहां भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों के साथ-साथ चार धामों- बद्रीनाथ, जगन्नाथ, द्वारका और रामेश्वरम की प्रतिकृतियां भी स्थापित हैं। *

हर की पैड़ी के शिव, हरिद्वार

हरिद्वार में हर की पैड़ी मंदिर बेहद लोकप्रिय श्रद्धा का केंद्र है। इसके ठीक सामने मौजूद है स्वामी विवेकानंद पार्क जहां भगवान शिव की 100 फीट ऊंची प्रतिमा विराजमान है। यहां देर शाम तक ठहर कर आप महादेव शिव के दर्शन के साथ-साथ गंगा आरती का भव्य नजारा भी देख सकते हैं। *

बेंगलुरु शिवोहम शिव मंदिर

ये शिव प्रतिमाएं भी हैं भव्य

यहां वर्णित भगवान शिव की विशाल एवं दिव्य प्रतिमाओं के साथ-साथ देश में कई अन्य स्थानों पर भी शिव के विशाल स्वरूप के दर्शन होते हैं।

- जबलपुर (मध्य प्रदेश) के कंछार शहर में 76 फीट लंबी शिव प्रतिमा मौजूद है। इसके चारों तरफ 12 ज्योतिर्लिंग भी विराजित किए गए हैं।
- बेंगलुरु में शिवोहम शिव मंदिर में मौजूद शिव प्रतिमा 65.6 फीट ऊंची है। यहां पृष्ठभूमि में हिमालय की प्रतिकृति बनाई गई है।
- गुजरात के द्वारका में मौजूद है नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर। यहां विराजित शिव प्रतिमा 82 फीट ऊंची है।

गुजरात नागेश्वर ज्योतिर्लिंग मंदिर

सेल्फ इंप्रूवमेंट / जोगिंदर रोहिल्ला

सफलता के लिए सीखनी होगी समय प्रबंधन की कला

समय की कद्र करना ही सफलता की पहली सीढ़ी है। पैसा, शोहरत, संबंध, सब कुछ दोबारा पाया जा सकता है, लेकिन एक बार गया हुआ समय फिर नहीं आता। इसलिए अगर सफल होना चाहते हैं, तो समय प्रबंधन की कला सीखनी ही होगी।

भारत के प्रसिद्ध महान आचार्य चाणक्य ने कहा था, 'पैसा दोबारा कमाया जा सकता है, लेकिन गया हुआ समय कभी वापस नहीं आता।'

सच है, हम सभी के पास दिन में 24 घंटे होते हैं। किसी के पास न ज्यादा, न कम। इसके बावजूद कुछ लोग हर दिन नई ऊंचाइयों को छूते हैं, जबकि बहुत सारे लोग समय की कमी की शिकायत करते रहते हैं। इसका कारण सीधा और सपष्ट है- सफल लोग समय को सिर्फ बिताते नहीं, वे अच्छे से समय को मैनेज करते हैं। हालांकि आज की तेज रफ्तार जिंदगी में लोग सबसे ज्यादा जिस चीज की कमी महसूस करते हैं, वह है- समय। घर-ऑफिस का वर्क प्रेशर, सोशल मीडिया, परिवार की जिम्मेदारियों में उलझकर लोग यही कहते हैं, क्या करें समय ही नहीं मिलता। पर सच यह है कि समय मिलता नहीं, समय मैनेज करना होता है। इसीलिए ब्रायन ट्रेसी ने कहा है, 'जो लोग अपने समय को नियंत्रित नहीं करते, वे अपने जीवन को नियंत्रित नहीं कर सकते।'

सक्सेसफुल टेनिस खिलाड़ी रोजर फेडरर के सफल बनने के पीछे केवल उनकी प्रतिभा ही नहीं, बल्कि उनका अनुशासित समय प्रबंधन भी था। उन्होंने अपनी ट्रेनिंग, रिकवरी और निजी जीवन-तीनों को संतुलन के साथ समयबद्ध किया, जिससे उनका प्रदर्शन लगातार ऊंचाइयों पर बना रहा।

समय प्रबंधन क्यों है जरूरी: हमें समझना होगा कि समय सीमित है। औसतन इंसान के पास सिर्फ 4000 हफ्ते होते हैं। घर-बाहर के काम कभी खत्म नहीं होते, इसलिए यह तय करना जरूरी है कि किस काम को पहले करना है और किसे बाद में?

आपको समझना होगा कि संतुलित जीवन में करियर, स्वास्थ्य, रिश्ते, खुशी सभी के लिए समय चाहिए होता है। जब हर चीज की प्लानिंग होती है तो इससे तनाव कम होता है, मन शांत रहता है।

समय प्रबंधन के तरीके: समय प्रबंधन करना बहुत कठिन नहीं होता है, इसके लिए कुछ बातों का ध्यान रखना होता है।

प्राथमिकता तय करें: जो काम जरूरी है, वही पहले करें। अर्जेंट और इंपॉर्टेंट का अंतर समझें। इसी तरह यह भी बहुत जरूरी है कि अनावश्यक कामों को मना करना सीखें। ऐसे काम करने में अपना टाइम वेस्ट ना करें।

प्लानिंग करें: काम शुरू करने के पहले से ही आपका हर महीना, हफ्ता और हर दिन प्लान होना चाहिए। अगर ये बहुत ज्यादा लगता है तो हर हफ्ते और हर दिन की प्लानिंग से शुरू कीजिए। अपने कार्यों को एक निश्चित समय और क्रम में इस तरह से प्लान कीजिए कि हर जरूरी काम समय पर, सही ध्यान और ऊर्जा के साथ पूरा किया जा सके। याद रखिए कि आपको प्लानिंग में जिंदगी के हर पहलू का ध्यान रखना है। जैसे- करियर, हेल्थ, परिवार, हॉबी।

इवेल्यूएशन करें: हर वीक के अंत में अपना इवेल्यूएशन खुद करें। स्वयं से पूछें कि इस हफ्ते मेरी उपलब्धियां कैसी रहीं? क्या मैं अपने समय का सदुपयोग कर पाया? क्या इसमें और सुधार की जरूरत है? इन सब प्रश्नों के उत्तर आपको हर हफ्ते अपने टाइम मैनेजमेंट को इंप्रूव करने में मदद करेंगे।

ना करें टाइम वेस्ट: आज के समय में सोशल मीडिया लोगों का समय वेस्ट करने वाला सबसे बड़ा जरिया बन गया है। हम अनजाने में दिन के कई घंटे इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यू ट्यूब या फेसबुक पर बिता देते हैं। जरूरी है कि हम इन चीजों के इस्तेमाल पर नियंत्रण रखें। आप खुद तय कर सकते हैं कि दिन में कितना समय इनको देना है। यह समझना जरूरी है कि हर काम के लिए 'हां' कहना जिम्मेदारी नहीं, कमजोरी बन सकता है। जब जरूरत हो, तो 'ना' कहना सीखें, ताकि आप अपने समय और ऊर्जा को सही दिशा में लगा सकें। *

यादें

अशोक वाधवाणी

हिंदी सिनेमा के आरंभिक दौर से ही रोमांटिक दृश्यों को प्रभावी बनाने के लिए सावन और बारिश के माहौल का इस्तेमाल किया जाता रहा है। ऐसे ही एक यादगार गीत 'रिमझिम गिरे सावन' से कुछ दिलचस्प बातें जुड़ी हुई हैं।

कुछ इस तरह फिल्माया गया था पॉपुलर गाना रिमझिम गिरे सावन...

सावन और बरसात का हिंदी फिल्मों से पुराना कनेक्शन रहा है। बीते दौर की ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों से लेकर आज तक हिंदी फिल्मों में बरसात में भीगते हुए नायक-नायिका पर रोमांटिक गाने फिल्माने की परंपरा चल रही है। इस तरह के प्रयोग अकसर ही फिल्म और गाने को हिट कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। बारिश में फिल्माए गए कई गाने इतने लोकप्रिय हुए हैं कि आज भी बारिश के मौसम में भीगने पर आम लोगों को भी उनकी पंक्तियां याद आ ही जाती हैं। ऐसे ही यादगार गानों की कड़ी में शामिल है वर्ष 1979 में रिलीज हुई फिल्म 'मंजिल' के का वो सुपरहिट गीत 'रिमझिम गिरे सावन...', जिसे फिल्माया गया था अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर। देखा जाए तो इस गाने की लोकप्रियता में बरसात ने उत्प्रेरक का काम किया। बासु चटर्जी के निर्देशन में बनी फिल्म 'मंजिल' मृणाल सेन द्वारा निर्देशित बांग्ला फिल्म 'आकाश कुसुम' (1965) का रीमेक है। इस फिल्म की कहानी को दर्शकों, समीक्षकों की समान रूप से सराहना मिली थी।

बैकग्राउंड में बजता है गाना: फिल्म 'मंजिल' के इस लोकप्रिय-कर्णप्रिय गीत 'रिमझिन गिरे सावन, सुलग-सुलग जाए मन...' को लिखा था योगेश ने और इसका सुरीला संगीत दिया था आर.डी. बर्मन ने। दिलचस्प बात यह है कि इस गाने को लता मंगेशकर और किशोर कुमार ने आवाज दी है, तो भी यह युगल गीत नहीं है। ये गाना अमिताभ बच्चन और मौसमी चटर्जी पर बारिश में भीगते हुए फिल्माया गया है। लेकिन पर्दे पर इन दोनों कलाकारों को यह गाना गाते हुए नहीं दिखाया गया है। पूरे सीक्वेंस के दौरान केवल बैकग्राउंड में बजता रहता है- रिमझिम गिरे सावन...।

असली बारिश में फिल्माया गया: इस लोकप्रिय गीत के साथ एक दिलचस्प बात यह भी जुड़ी है कि इसको मुंबई की असली बारिश में अलग-अलग लोकेशंस पर तीन दिनों तक पिक्चराइज किया गया था। मुंबई के मरीन ड्राइव, गिरगांव चौपाटी, फोर्ट, गेट वे ऑफ इंडिया, ओवल मैदान, हुतात्मा चौक आदि दक्षिण मुंबई के दर्शनीय स्थानों पर इसे शूट किया गया। अमिताभ और मौसमी ने भी इस गाने में स्वाभाविकता लाने की कोशिश की, जिसमें दोनों सफल भी हुए। सूट, टाई पहने अमिताभ और सीधी-सादी साड़ी पहने मौसमी बिना छाते के बारिश में भीगते, अठखेलियां करते हुए टहलते दिखते हैं। बारिश से बचने के लिए इनके पास कोई छाता या रेन कोट नहीं होता है। वहीं हाथों में छाता थामे हुए लोगों का हुजूम, इन्हें भीगते हुए देखता है।

गाने का हर दृश्य है कमाल: इस गाने में बेहद सादगीपूर्ण ढंग से बारिश की मस्ती और प्रेम की भावना को दर्शाया गया है। हाथों में हाथ डाले प्रेमियों की भांति अमिताभ-मौसमी का भीगना बहुत अच्छा लगता है। समंदर किनारे बनी दीवार पर अमिताभ का हाथ पकड़े हुए मौसमी का चलना-फिरना, अमिताभ का दोनों हाथों से पकड़ कर मौसमी को नीचे उतारना, चेहरे पर जमी बारिश की बूंदों को मौसमी द्वारा अपनी साड़ी के पल्लू से पोंछना, ये सारे दृश्य सुंदर, स्वाभाविक और कमाल बन पड़े हैं।

पूरे गाने में दोनों कलाकारों का उत्साह देखते ही बनता है। बालमन जिस तरह बिंदासपन के साथ बारिश में उछलता-कूदता है, बिल्कुल वही उमंग, उत्साह, उल्लास, ऊर्जा दिखती है दोनों में। गोथिक शैली की ब्रिटिशकालीन बड़ी-बड़ी इमारतों के सामने, नारियल के पेड़ों के पास खुले मैदान के गड्ढों में भरे पानी को पूरे जोश-जुनून के साथ पैरों से छपाक मारना, अमिताभ-मौसमी का मासूम अल्हड़पन, ...गाने का एक-एक फ्रेम, एक-एक दृश्य बेहद खूबसूरत बन पड़ा है। *

आकाशवाणी सार्वजनिक क्षेत्र की रेडियो प्रसारण सेवा है, जो लगभग एक सदी से ज्ञान, सूचना और मनोरंजन का साधन बना हुआ है। आगामी 23 जुलाई को आकाशवाणी के स्थापना दिवस पर इसकी अब तक की यात्रा पर एक नजर।

अतीत से अब तक बरकरार आकाशवाणी की महत्ता

जानकारी

पूनम पांडे

आज आभासी दुनिया और तकनीक से सब कुछ जान लेने वाली पीढ़ी को अगर साढ़े चार दशक पहले के भारत की यह खास बात बताई जाए कि आकाशवाणी जीवन का एक अटूट हिस्सा हुआ करता था तो शायद वो एकदम से यकीन न करे। पर यही तब के समय का सच था।

आकाशवाणी की शुरुआत

आकाशवाणी की स्थापना 23 जुलाई 1927 को की गई थी। उस समय इस सेवा का नाम भारतीय प्रसारण सेवा (इंडियन ब्रॉडकास्टिंग कॉरपोरेशन) रखा गया था। तब देश में रेडियो प्रसारण की शुरुआत मुंबई और कोलकाता में दो निजी ट्रांसमीटरों से की गई थी। 1930 में इसका राष्ट्रीयकरण हुआ। 1936 में इसका नाम ऑल इंडिया रेडियो रखा गया और 1957 में इसे आकाशवाणी नाम दिया गया।

जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका

उस दौर में भारत में साक्षरता दर बहुत कम थी। वे दुनिया की दौड़ में बहुत पीछे थे। आकाशवाणी के माध्यम से बड़े ही सरल ढंग से आम बोल-चाल की भाषा में विभिन्न प्रकार की जानकारियां आम लोगों तक उपलब्ध कराई जाती थी। दूर-दराज के ग्रामीण इलाके में लोगों से जुड़कर और उनको जागरूक करने में रेडियो पर प्रसारित होने वाले आकाशवाणी के कार्यक्रमों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। भारत के राष्ट्रीय प्रसारक के रूप में, ऑल इंडिया रेडियो (एआईआर) यानी आकाशवाणी आज भी जनता को मनोरंजन, सूचना एवं ज्ञानपरक सेवाएं दे रहा है। आकाशवाणी शुरुआत से ही अपने आदर्श वाक्य 'बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय' का अनुसरण कर रहा है।

आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क

अपनी स्थापना के बाद से धीरे-धीरे आकाशवाणी के नेटवर्क का विस्तार होता गया। आज आकाशवाणी का तेइस भाषाओं और एक सौ छियालीस बोलियों में प्रसारण होता है। आकाशवाणी का व्यापक नेटवर्क देश की लगभग पूरी आबादी एवं क्षेत्र को कवर करता है।

हर तरह का मनोरंजन

आकाशवाणी समस्त भाषायी प्रदेशों की जनता के लिए गीत-संगीत, नाटक, गोष्ठियां, वार्ताएं, रूपकों, संस्मरणों आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का प्रसारण करता है। इसके अलावा आकाशवाणी की विविध भारती सेवा फिल्मी गीतों को समर्पित होती है। आकाशवाणी पर समस्त कार्यक्रमों का लगभग पचास प्रतिशत समय मनोरंजन परक कार्यक्रमों के लिए होता है।

सूचना, शिक्षा एवं ज्ञान भी

आकाशवाणी पर हर एक घंटे पर मुख्य समाचार प्रसारित किए जाते हैं। इसके अलावा प्रातःकाल और सायंकाल में 15 मिनट की अवधि का समाचार बुलेटिन प्रसारित होता है। यह समाचार बुलेटिन हिंदी और अंग्रेजी भाषा में प्रसारित किया जाता है। बुलेटिन को इस तरह से तैयार किया जाता है कि श्रोता को उसे समझने के लिए किसी भी शब्दकोश का सहारा न लेना पड़े। आकाशवाणी पर श्रोताओं के विभिन्न समस्याओं को लेकर वार्ताएं भी प्रस्तुत की जाती हैं। अनुसंधानों के परिणामों, अभिभाषणों की कार्यवाही को लिपिबद्ध करके प्रस्तुत किया जाता है। इसके अंतर्गत कृषि, विज्ञान संबंधी शिक्षा देना भी शामिल होता है। आकाशवाणी के माध्यम से स्कूल तथा कॉलेज की कक्षाओं के लिए रेडियो द्वारा पाठ्य विषयों पर चर्चाएं भी प्रसारित की जाती हैं।

कायम है प्रासंगिकता

देखा जाए तो आज भी रेडियो और आकाशवाणी जनसंचार का सशक्त माध्यम बना हुआ है। इसने गांव-गांव तक ज्ञान की चेतना को पहुंचाने का अविस्मरणीय कार्य किया है। हालांकि आज संचार के विविध माध्यम, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स और हर हाथ में मोबाइल की पहुंच ने रेडियो और आकाशवाणी के अस्तित्व को चुनौती अवश्य दी है, लेकिन इसकी कुछ अनूठी विशेषताओं के कारण आज भी इसकी लोकप्रियता, उपयोगिता एवं प्रासंगिकता बनी हुई है। *

खान-पान

चेतना झा

बारिश का मौसम और पकौड़े का कनेक्शन तो आप जानते ही हैं! लेकिन यहां हम आपको देश के अलग-अलग हिस्सों में खाए जाने वाले कुछ जायकेदार मानसूनी व्यंजनों के बारे में बता रहे हैं, जिनका स्वाद आप कभी भुला नहीं पाएंगे।

जायकेदार मानसूनी व्यंजनों का स्वाद

लाजवाब राजस्थानी दाल-बाटी-चूरमा: राजस्थान की धरती पर बारिश की बूंदें स्वाद की नई बयार भी लेकर आती हैं। बारिश हुई नहीं कि गोठ के प्रोग्राम बनने लगते हैं। गोठ यानी, प्रकृति के करीब या पार्कों में जाकर सामूहिक पिकनिक मनाना। अपनों के साथ खुले सुखद परिवेश में दाल-बाटी चूरमे का रसास्वादन सबसे ज्यादा चलन में है। सावन के महीने में तीज और राखी जैसे पर्व पर यहां की फिजा में घेवर की खुशबू भी घुल-मिल जाती है। घेवर में स्वाद की इतनी विविधता मिलती है कि आप चखते जाएंगे पर इसका अंत नहीं होगा। मेवाड़ क्षेत्र में घूमिए तो गली-गली से उठती पकौड़े, मालपूए की सुगंध भूख बढ़ा देती है। इसके साथ ही भुट्टे की सब्जी के साथ घी चुपड़ी रोटी का स्वाद कभी नहीं भुला पाएंगे।

दाल-बाटी-चूरमा

यूपी में अंगीठी वाली मीठी रोटी: अब बात यूपी की अंगीठी वाली मीठी रोटी, अरबी के पत्ते के पकौड़े, अगस्त्य के फूल के पकौड़े की। भिगोकर पीसी गई उड़द और चने की दाल को हरी मिर्च, धनिया, अदरक डाल कर भून देते हैं, फिर धो-सुखा कर, अरबी के पत्तों पर इन्हें लपेट कर स्टीम देते हैं। इसके बाद बनती है इनकी पकौड़ी। लंबी प्रक्रिया है लेकिन बरसात आते ही घर-घर में इसे बनाया और चाव से खाया जाता है।

अगस्त्य के फूल के पकौड़े

धुसका-बर्रा

झारखंड में धुसका-बर्रा: 'धुसका बर्रा खाएंगे, झारखंड में बस जाएंगे...' इस गाने की पंक्तियों की तरह ही हिट है झारखंड का धुसका-बर्रा। सच है, बारिश के दिनों में झारखंड की हरी-भरी धरती पर धुसका खाने के बाद किसी का भी दिल यहां बस जाने को करेगा। बराबर की मात्रा में चना दाल और अरवा चावल को भिगोकर उसमें जीरा, मिर्च आदि मसाले मिलाकर पीसा जाता है फिर तुरंत ही तल कर बनाते हैं धुसका। आलू की खट्टी-मीठी सब्जी के साथ इसका लुत्फ उठाया जाता है। इनके अलावा यहां रूगड़ा भी इस मौसम में खूब चाव से खाया जाता है। इसे 'शाकाहारी मटन' भी कहा जाता है।

एमपी में दाल-बाफला: पश्चिमी मध्य प्रदेश का एक बड़ा हिस्सा है मालवा। यहां बारिश की बूंदें दाल-बाफला का संदेश लेकर आती हैं। बाफला यानी आटे की बाटी को कंडे की आग में पका कर तैयार किए गए सोंधे-सोंधे बड़े। पकाने के बाद इन बड़ों से राख झाड़ कर घी की कटोरी में डुबो देते हैं, फिर खट्टी-मिठ्ठी दाल के साथ इसका स्वाद लिया जाता है। *

बिहार की कचरी-मूरही और लिट्टी-चोखा

बिहार में बारिश होते ही लिट्टी और बैंगन के चोखे के अलावा कचरी-मूरही की तलब जगने लगती है। कचरी यानी लच्छे में कटे प्याज में कटी हरी मिर्च, लहसुन, अदरक, बैंगन, फूलगोभी और मसाले डाल कर बेसन के घोल में लपेट कर तैयार पकौड़े। मूरही यानी पफ्ड राइस या मुरमुरे। बारिश में गरमा-गरम कचरी के साथ मूरही का स्वाद भुलाया नहीं जा सकता है।

लिट्टी के लिए चने के सत्तू में बारीक कटी हरी मिर्च, धनिया पत्ती, अदरक, लहसुन, नीबू का रस, अजवाइन, कलौंजी, नमक और कुछ बूंदें सरसों के तेल डाल कर मिश्रण तैयार किया जाता है। गूंथे आटे की गोली में यह मिश्रण डाल कर गोइठे या कोयले की आग में पकाया जाता है। फिर इसी आंच पर बैंगन को भून कर चोखा तैयार किया जाता है। इसका स्वाद एक बार अगर जुबान पर चढ़ गया तो यकीन मानिए, इसे बार-बार खाने का जी करेगा।